thearyasamaj.org

पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या-एसएसपी/एल०डब्लू०/एन०पी०/318/2014-16

ओ३म्

कृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्राः

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-१७, अंकः-७; जनवरी, सन्-२०१५, सं०-२०७१ वि०, दयानंदाब्द १९१, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११५; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

देश में पाकिस्तान बनाने की मनोवृत्ति अभी भी विद्यमान है !

अधिकांश नेता इसी रास्ते पर चल रहे हैं !

घर के अंदर के सुधार का उपाय तो आर्य समाज के पास है !!

अद्वितीय वक्ता और विचारक स्वर्गीय प्रकाशवीर शास्त्री (भू. पू. सांसद) के सन् 1952 में दिये गये भाषण का अंश- जो आज भी प्रासंगिक है।

सचाई तो यह है इतना सब कुछ होने के बाद भी भले ही देश में पाकिस्तान बन गया परन्तु वह मनोवृत्ति अभी भी विद्यमान है, और विद्यमान ही नहीं, वह और भी अधिक विकराल रूप लेने लगी है। उधर हमारे नेताओं का अधिकांश भाग फिर उसी मार्ग का अवलम्बन करने लगा है जिन भूलों ने देश में पाकिस्तान बनवाया है। पाकिस्तान के विषैले समाचार पत्र भारत में अच्छी संख्या में आते हैं जो लोग सहस्रों की संख्या में हाय रे मर गये, पिट गये का ढोल पीटते आकर दुबारा फिर बस रहे उनका भी अपना आन्दोलन जिसकी ट्रेनिंग वह वहां लेकर आये वह जारी है, इधर भारत के भी मुस्लिम समाचार पत्र अपनी सी पर फिर उतर रहे हैं, नहीं कहा जा सकता कब तक इस नाव में छेद होते रहने दिये जायेंगे?

महा कवि अकबर ने तो उस समय जब हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य का नारा लगवाते हुए आठ-दस साल हो लिये थे और मजहबी जजून चढ़ता ही जा रहा था जो बात कही थी, वह आज तो और भी बढ़ कर लागू होती है-

कि इतने दिन हुए तो भी दमे हमदम नहीं मिलते।
घरों से घर मिले हैं पर दिलों से दिल नहीं मिलते।।

और मिले भी तो कैसे? जिनके राग का केन्द्र बिन्दु भारत नहीं है और जब भी उन्हें प्रेरणा लेने की आवश्यकता होती है तो जो अरब मक्का-मदीना और पाकिस्तान की ओर आंख उठाकर देखते हैं उनसे राष्ट्र-प्रेम की आशा? जिनका अधिकांश भाग पांच-पांच समय तो नियमित रूप से भारत से बाहर की ओर एक दिन में झांककर देखता है, एक महीने रोजा रखते हैं और प्रातः छुआरा (खजूर) खाकर जो रोजा यों खोलते हैं क्योंकि छुआरा अरब में पैदा होता है जब कि बाद में पेट भारत की रोटी से भरना है, जिसे कोयल की जगह बुलबुल, हिमालय के स्थान पर कोहेतूर, गंगाजल के स्थान पर आबे जमजम, वीरों में शिवा प्रताप के स्थान पर रुस्तम और सोहराब, राजाओं में विक्रम और भोज के स्थान पर हातिमताई और नौशेरवां, वाल्मीकि और व्यास के स्थान पर सुकरात और अफलातून याद आते हैं उनसे और भारतीय दृष्टिकोण की आशा? गांधी टोपी लगाने पर राष्ट्रीयता की गारन्टी नहीं मिल जाती, वफादारी की शपथों का आरम्भ करने वाले खलीकुज्जमां और जहरुलहसन लारी आज पाकिस्तान में कितने चुपके से निकल भागे। लायकअली जब करांची पहुंच गया तब यहां उसकी खोज आरम्भ होती है।

केवल वेश बदलने पर राष्ट्रीयता नहीं आ जाती जब तक जहनीयत (मनोवृत्ति) न बदले तब तक वह असम्भव है। हमारे विचार में मनोवृत्ति परिवर्तन करने का काम नेहरू जी आर्यसमाज को सौंपें जिसने इसका बीड़ा बहुत पहले से उठाया हुआ है। माना कि आपने बहुत कुछ काम किया है जिसमें अंग्रेज मदारी को बाहर निकालना भी है परन्तु बाहर के शत्रु को आप बाहर कर सकते हैं घर के अन्दर का सुधार आर्य समाज के ही उपाय पर चलने से होगा। सन् १९२५ में लाला हरदयाल जी ने भी यह ही कहा था।

पंचतंत्र में पं.विष्णु शर्मा ने लिखा है किसी शेर और शेरनी के बच्चे नहीं होते थे। उन्होंने एक गीदड़ का बच्चा पाल लिया। बाद में कुछ ऐसा हुआ जो उनको भी बच्चा हो गया। अब वह बच्चा जो शेरनी का अपना था और वह पहला गीदड़ी वाला बड़े और छोटे भाई बनकर खेलने-कूदने लगे। एक बार जंगल में एक हाथी आ निकला। शेरनी के गर्भ से पैदा हुए बच्चे का खून गरमाया और मूंछे तान कर घुर्राने लगा हाथी पर हमला करने को, परन्तु उसका वह बड़ा भाई बोला नहीं ऐसा मत करो 'अहिंसा परमो धर्मः' मारना पाप है। छोटा भाई मन मसोस कर रह गया और घर आकर सारी कथा अपनी माँ सिंहनी को सुनाई। सिंहनी ने माथे पर हाथ मारा और बड़े भाई से बोली-

शूरोऽसि कृत विद्योऽसि दर्शयानीयोऽसि पुत्रक!
यस्मिन् कुले त्वमुत्पन्नः गजस्तत्र न हन्यते।

बेटे! माना तू बहादुर, गुणी और सुन्दर है परन्तु जिस कुल में तू जन्मा है वहाँ हाथी मारने का काम किया ही नहीं जाता। सो पंडित जी! इस विदेशी मनोवृत्ति रूपी हाथी को कुचलने का काम तो आर्यसमाज को सौंपिये और कुछ दिन उसकी पीठ थपथपा दीजिये फिर देखिये आपका मार्ग कितना सुगम हो जाता है। हिंसा में आर्य समाज का भी बिल्कुल विश्वास नहीं है यदि होता तो जब इसके नेता अमर शहीद पं.लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, म. राजपाल, पं.रामचन्द्र आदि ८४ नेता मारे गये यह भी उत्पात कर सकते थे परन्तु इसका तो लक्ष्य कुछ और ही था। अछूतोद्धार आन्दोलन को ही देखिये जिसे आर्यसमाज ने इतने दिन से चलाया आज थोड़ा सा राज्य सहयोग मिलने पर उसे कैसे चार चांद लग गये, ठीक इसी प्रकार यदि भारतीयकरण (शुद्धि) आन्दोलन के साथ आपकी सहानुभूति भरी दृष्टि भी हो जाये तो पौने नौ सौ साल की अभारतीयता पौने नौ वर्ष मे समाप्त हो सकती है। ऐसा करके आप उनकी भी भावी पीढ़ी के साथ बहुत बड़ा उपकार करेंगे। कोयलों को साबुन से धोकर श्वेत करने के स्वप्न मत देखिये, विदेशी कालिमा जिन मस्तिष्कों पर थी और आपने एकता के नारों का साबुन बहुत लगाया परन्तु वह कालिमा बढ़ी ही और अन्त में देश का विभाजन कराकर भी शांत नहीं हुई। कम से कम रोगी की दिन दिन बिगड़ती हुई हालत देखकर कुछ तो औषधि में परिवर्तन कीजिये। इन अभारतीय मस्तिष्क रूपी कोयलों को साबुन से सफेद होने का स्वप्न छोड़कर जरा दयानन्द की धधकती शुद्धि की भट्टी में भी छोड़कर देखिये क्या परिणाम होता है। भट्टी में जाने के बाद कोयला स्वयं कालिमा छोड़ बैठेगा। केले और बेर की झाड़ियां एक साथ लगाकर भारतोद्यान की शोभा न नष्ट कीजिये अन्यथा हवा चलने पर अहिंसा और दया का अवतार यह केला (हिन्दू) नष्ट हो जायेगा। रहीम ने लिखा है-

रहिमन मोहि सोहत नहिं केर बेर के संग।
वे डोलत रस आपने उनके फाटत अंग।।

अब आसाम और मद्रास के कुछ ईसाइयों ने भी उसी प्रकार के पग उठाने आरम्भ कर दिये हैं जैसे कभी बाबर आदि ने मन्दिरों को तोड़-तोड़कर उठाये थे। मद्रास में ५० से अधिक मन्दिर हिन्दुओं के सुना गया है नष्ट कर दिये गये, आसाम में तो पृथक् स्थानों की मांग तक की गई। चतुर अंग्रेज ने अपने साथ साथ क्रिश्चियनिटी का जो बीज लगाया था और उसकी जड़ में भारतीयों का ही रक्त डाल कर उसे पल्लवित भी किया, अंग्रेज के जाते ही ईसाइयत के उस लहराते हुए वृक्ष ने कुछ मुरझाना आरम्भ किया था। दक्षिण में उनके बड़े बड़े आठ मिशनों के भवन भी बिक गये थे, लेकिन सेक्युलरिज्म (धर्मनिरपेक्ष राज्य) की आड़ में अब वह फिर अपनी कमर सीधी कर रहे हैं।

शेष पृष्ठ 3 पर...

स्व.प्रकाशवीर शास्त्री

विनय पीयूष

तू भी अपनी प्यास बुझा ले !

यथा गौरो अपाकृतं तृष्यन्नेत्पवेरिणम्।
आपित्वे नः प्रपित्वे तूयमागहि कण्वेषु सु सचा पिब।।

(साम. पू. : 3/2/10)

तू भी अपनी प्यास बुझा ले !

जैसे मृग को मिले जलाशय,
हमें मिला भक्तों का आश्रय,
जाग बन्धु, अब देर न कर कुछ,
अमृत पी ले, प्राण जुड़ा ले !

तू भी अपनी प्यास बुझा ले !

काव्यानुवाद : अमृत खरे

सम्पादकीय

नरेन्द्र मोदी का मोहन मंत्र

श्री नरेन्द्र मोदी का भाजपा की ओर से प्रधानमंत्री पद का प्रत्याशी घोषित होना और प्रचण्ड बहुमत से निर्वाचित होना कोई आसान काम नहीं था। गुजरात के मुख्यमंत्री और भारतवर्ष के प्रधानमंत्री के मध्य फासला कण्टकाकीर्ण था। उनके मार्ग की सबसे बड़ी बाधा तो भाजपा के वरिष्ठतम नेता, देश के गृहमंत्री और उप प्रधानमंत्री पदों का अनुभव सहेजने वाले तपे तपाये नेता मा. लालकृष्ण आडवाणी थे; जिनको जे.डी.यू. आदि सहयोगी दलों का पूरा सहयोग समर्थन प्राप्त था। इसी तरह की अन्यान्य अनेक बाधाओं को पार करते हुए मोदी जी एक ऐसी आवाज बन गये जिसने सदियों से बिखरे हुए राष्ट्र को जागरूक और संगठित कर दिया।

एक ऐसी आवाज जिसने समूचे राष्ट्र को झकझोर दिया तथा २०१४ के लोकसभा चुनावों में पहली बार प्रचण्ड बहुमत भारतीय जनता पार्टी की झोली में डाल दिया। सदियों में कहीं एक ऐसी बुलन्द आत्मविश्वास से उद्दीप्त आवाज सुनाई देती है! इतिहास ने करवट बदलीऔर वह आवाज भारतीय शासन सत्ता के सर्वोच्च शिखर दिल्ली के लालकिले पर चढ़कर बोलने लगी। नरेन्द्र मोदी का विजय अभियान दिल्ली के सिंहासन पर आरूढ़ होकर ही नहीं रुका वरन् कर्नाटक, महाराष्ट्र, हरियाणा, जम्मू कश्मीर और झारखण्ड तक भाजपा की आशाओं आकांक्षाओं का पारिजात खिलाने में कामयाब हुआ। गोस्वामी तुलसी दास जी ने कभी श्रीराम के रामराज्य के बारे में घोषणा की थी- वह आज श्री मोदी पर घटित हो रही है-

भूमि सप्त सागर मेखला,
एक भूप रघुपति कोसला।

अथवा यों कहें कि महाकवि भूषण ने कभी छत्रपति शिवाजी महाराज के बारे में जो कहा था, मोदी जी पर वह चरितार्थ हो रहा है-

आजु गरीब ने बाज मही पर
तो सों तु ही सिवराज बिराजै।

पेट्रोल, डीजल के दाम घटे, बढ़ती मँहगाई पर अंकुश लग गया, सीमाओं के प्रहरी चाक चौबंद हुए, मंत्री और सांसद ग्रामोत्थान में लगाये गये, संस्कृत और हिन्दी को उसका उचित स्थान मिला और पुण्य भूमि वाराणसी को नया जीवन मिला; गंगा की धाराओं की मलिनता विसर्जित होने लगी, मंदिरों में शंख ध्वनियाँ गूँजने लगीं और महामना मदन मोहन मालवीय, अटल बिहारी वाजपेयी जैसे माँ भारती के वरद पुत्रों को 'भारत रत्न' की उपाधि का गौरव प्राप्त हुआ।

वह कौन सा था 'मोहन मंत्र'; जिसने इतनी सारी सिद्धियाँ मोदी जी के चरणों में बिखेर दीं? आप जानना चाहेंगे- उस 'मोहन मंत्र' का नाम, तो जान लीजिए उस 'मोहन मंत्र' को 'श्री मोहन भागवत' कहते हैं। जी, हाँ, यह मोहन भागवत का ही करिश्मा था जिसने श्री आडवाणी जैसे वरिष्ठ नेता को वह आइना दिखा दिया, जिसमें वे भारत के सर्वाधिक निंद्य पाकिस्तान के संस्थापक और निर्माता मोहम्मद अली जिन्ना की मजार पर चादर चढ़ा रहे थे। वे श्री मोहन भागवत ही थे, जिन्होंने नितीश जैसे चतुर शकुनियों द्वारा फेंके गये पांसे को उलट दिया और मोदी जी के मार्ग के सभी कांटे साफ कर दिये। मोदी रूपी चन्द्रगुप्त के श्री मोहन भागवत सच्चे अर्थों में चाणक्य प्रमाणित हुए हैं।

सर संघचालक तो पहले भी हुए हैं किन्तु जो सौभाग्य श्री मोहन भागवत को सुलभ हुआ वह अन्य किसी को नहीं हो सका- गोलवलकर, देवरस, रज्जू भैया तथा एक से बढ़कर एक योग्य सेनानायक संघ परिवार को मिल चुके हैं किन्तु श्री मोहन भागवत के भाग्य कमल की पंखुड़ियाँ ही पूर्णरूपेण विकसित हो सकीं। भक्त शिरोमणि सूरदास ने एक पद में यशोदा मैया के सौभाग्य का वर्णन करते हुए कहा है-

कान्ह चलत पद द्वै द्वै धरनी,
जो मन में अभिलाष करत ही, सो देखत नंद धरनी।

ऐसी सुखद स्थिति में स्वाभिमान और आत्मगौरव से दीप्त श्री भागवत का यह कथन स्वाभाविक ही है कि ८०० वर्ष बाद दिल्ली में हिन्दू राज्य की पुनः प्रतिष्ठा हुई है।...किन्तु ८०० वर्ष के ही इतिहास पर नजर गड़ाना कुछ चिन्ताएं बढ़ा देता है। ८०० वर्ष और उसके भी कुछ वर्षों का इतिहास तो भारत की संकीर्णता अदूरदर्शिता, भ्रान्तिपूर्ण दर्शन का द्योतक है। उस युग में तो पारस्परिक वैमनस्य और आपसी लड़ाई झगड़ों का ही बोलबाल था- उससे भी पीछे अगर श्री भागवत जी देखें तो देश के इतिहास में अनेकों सुनहरे पृष्ठ मौजूद हैं। एक ऐसे ही स्वर्णिम पृष्ठ का वर्णन राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त अपनी 'भारत भारती' में करते हैं-

जिसके समक्ष न एक भी विजयी सिकंदर की चली
वह चन्द्रगुप्त महीप था, कैसा अपूर्व महाबली।
जिससे कि सैल्यूकस समर में, हार तो था ले गया
गांधार आदिक देश देकर, निज सुता बल दे गया।

अपनी खोई हुई स्मृति को पुनः प्राप्त करने के पश्चात् महाराज दुष्यंत जब देवी शकुन्तला की खोज में वन वन में भटक रहे थे तो कहीं उन्होंने एक छोटे से बालक को सिंहनी के शावकों के दांतों की गणना करते हुए देखा था। कविवर जयशंकर प्रसाद की पंक्तियों में यह दृश्य मूर्तिमान हो उठा है-

यही भरत वह बालक है, जिसके नाम से,
'भारत' संज्ञा पड़ी, इस नर भूमि की।

आर्यावर्त को भारत वर्ष की संज्ञा देने वाला दुष्यन्त-शकुन्तला का पुत्र भरत जिसने चक्रवर्ती आर्य साम्राज्य की स्थापना की थी, हिन्दुओं का ही पूर्वज था। क्या भरत, भारतवर्ष और भारतीयता हिन्दुओं के लिए कम गौरव की बात है। फिर ८०० वर्ष की ही बार बार चर्चा क्यों?

सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-१५४

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में सप्तम समुल्लास का अंश

(प्रश्न) जीव शरीर में भिन्न विभु है वा परिच्छिन्न?

(उत्तर) परिच्छिन्न। जो विभु होता तो जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, मरण, जन्म, संयोग, वियोग, जाना, आना कभी नहीं हो सकता। इसलिए जीव का स्वरूप अल्पज्ञ, अल्प अर्थात् सूक्ष्म है और परमेश्वर अतीव सूक्ष्मात्सूक्ष्मतर, अनन्त सर्वज्ञ और सर्वव्यापक स्वरूप है। इसलिए जीव और परमेश्वर का व्याप्य व्यापक सम्बन्ध है।

(प्रश्न) जिस जगह में एक वस्तु होती है उस जगह में दूसरी वस्तु नहीं रह सकती। इसीलिये जीव और ईश्वर का संयोग सम्बन्ध हो सकता व्याप्य व्यापक नहीं।

(उत्तर) यह नियम समान आकारवाले पदार्थों में घट सकता है असमानाकृति में नहीं। जैसे लोहा स्थूल, अग्नि सूक्ष्म होता है, इस कारण लोहे में विद्युत् अग्नि व्यापक होकर एक ही अवकाश में दोनों रहते हैं, वैसे जीव परमेश्वर से स्थूल और परमेश्वर जीव से सूक्ष्म होने से परमेश्वर व्यापक और जीव व्याप्य है। जैसे यह व्याप्य व्यापक सम्बन्ध जीव ईश्वर का है वैसा ही सेव्य सेवक, आराधेय, स्वामिभृत्य, राजा प्रजा और पिता पुत्र आदि भी सम्बन्ध हैं।

(प्रश्न) ब्रह्म और जीव जुदे हैं वा एक?

(उत्तर) अलग-अलग हैं।

अद्वैतवाद का खण्डन

(प्रश्न) जो पृथक्-पृथक् हैं तो-
प्रज्ञानं ब्रह्म।।१।। अहं ब्रह्मास्मि।।२।। तत्त्वमसि।।३।। अयमात्मा ब्रह्म।।४।।
वेदों के इन महावाक्यों का अर्थ क्या है?

(उत्तर) ये वेदवाक्य ही नहीं हैं किन्तु

ब्राह्मण ग्रन्थों के वचन हैं और इनका नाम महावाक्य कहीं सत्यशास्त्रों में नहीं लिखा। अर्थात् ब्रह्म प्रकृष्ट ज्ञानस्वरूप है (अहम्) मैं (ब्रह्म) अर्थात् ब्रह्मस्थ (अस्मि) हूँ। यहां तात्स्थ्योपाधि है; जैसे 'मंचा क्रोशन्ति' मचान पुकारते हैं। मचान जड़ है, उनमें पुकारने का सामर्थ्य नहीं, इसलिए मंचस्थ मनुष्य पुकारते हैं। इसी प्रकार यहां भी जानना।

कोई कहे कि ब्रह्मस्थ सब पदार्थ हैं; पुनः जीव को ब्रह्मस्थ कहने में क्या विशेष है? इसका उत्तर यह है कि सब पदार्थ ब्रह्मस्थ हैं परन्तु जैसा साधर्म्ययुक्त निकटस्थ जीव है वैसा अन्य नहीं। और जीव को ब्रह्म का ज्ञान और मुक्ति में वह ब्रह्म के साक्षात्सम्बन्ध में रहता है। इसलिये जीव को ब्रह्म के साथ तात्स्थ्य वा तत्सहचरितापाधि अर्थात् ब्रह्म का सहचारी जीव है। इससे जीव और ब्रह्म एक नहीं।

जैसे कोई किसी से कहे कि मैं और यह एक हैं अर्थात् अविरोधी हैं। वैसे जो जीव समाधिस्थ परमेश्वर में प्रेमबद्ध होकर निमग्न होता है वह कह सकता है कि मैं और ब्रह्म एक अर्थात् अविरोधी एक अवकाशस्थ हैं। जो जीव परमेश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के अनुकूल अपने गुण, कर्म, स्वभाव करता है वही साधर्म्य से ब्रह्म के साथ एकता कह सकता है।

(प्रश्न) अच्छा तो इसका अर्थ कैसा करोगे? (तत्) ब्रह्म (त्वं) तू जीव (असि) है। हे जीव! (त्वम्) तू (तत्) वह ब्रह्म (असि) है।

(उत्तर) तुम तत् शब्द से क्या लेते हो? 'ब्रह्म'।

ब्रह्मपद की अनुवृत्ति कहां से लाये?

'सदेव सोम्येदमग्र आसीदेकमेवा द्वितीयम्।' इस पूर्व वाक्य से।

तुमने इस छान्दोग्य उपनिषद् का दर्शन भी नहीं किया। जो वह देखी होती तो वहां ब्रह्म शब्द का पाठ ही नहीं है। ऐसा झूट क्यों कहते? किन्तु छान्दोग्य में तो- **सदेव सोम्येदमग्र आसीदेकमेवा द्वितीयम्।'** ऐसा पाठ है। वहां ब्रह्म शब्द नहीं। *(क्रमशः)*

वेदांजलि

मेरे सत्कर्म जीवन को यज्ञमय बना दें

❑ पं.शिव कुमार शास्त्री
भू.पू.संसद सदस्य

मह्यं यजन्तु मम यानि हव्याकूतिः सत्या मनसो मे अस्तु।
एनो मा नि गां कतमच्चनाहं विश्वे देवासो अधिवोचता नः।।

—ऋग्वेद 10/128/4

शब्दार्थ–

(मम) मेरे **(यानि)** जो **(हव्या)** सांसार के व्यवहार को चलानेवाले सद्गुण हैं, वे **(मह्यम्)** मेरे लिए **(यजन्तु)** हितकारक हों **(मे)** मेरा **(मनसः)** मन का **(आकूतिः)** चिन्तन **(सत्या)** सत्य **(अस्तु)** होवे। **(अहम्)** मैं **(कतमच्चन)** किसी भी अवस्था में **(एनः)** पाप **(मा नि गाम्)** न करूँ **(विश्वेदेवासः)** हे सब विवेकी विद्वानों ! **(नः)** हम लोगों को **(अधिवोचत)** उपदेश करो- अच्छाई और सचाई का प्रचार करो।

व्याख्या– इस ऋचा में चार बातें कही गई हैं- पहली यह कि मेरे सद्गुण मुझमें विकसित होकर मेरा कलयाण करें। दूसरी यह कि मेरे संकल्प सत्य हों। तीसरी यह कि मैं किसी भी अवस्था में पापाचरण न करूँ। चौथी यह कि विद्वानों का यह कर्त्तव्य है कि वे संसार को सन्मार्ग पर चलने का उपदेश करते रहें।

अब थोड़ा विस्तार से बिचार कीजिये- संसार का कोई पतित-से-पतित मनुष्य भी ऐसा न मिलेगा, जिसमें सब दुर्गुण ही दुर्गुण हों, कोई भी सद्गुण न हो। इसी प्रकार ऐसे भी विरले ही महापुरुष होंगे, जिनमें अच्छाइयाँ ही हों, कोई दुर्गुण न हो। यदि कोई हैं तो वे देव कोटि के हैं, सामान्य नहीं; क्योंकि, शतपथ ब्राह्मण ने देवों और मनुष्यों के बीच सीमा रेखा खींचते हुए लिखा है- **"सत्यं वै देवाः, अनृतं मनुष्याः"** अर्थात् देवों का जीवन तपःपूत सत्यमय होता है। मनुष्य उस भव्य भवन पर चढ़ने के लिए यत्नवान् तो है, पर मनःस्थिति के अपरिपक्व होने से संसार के प्रलोभन उसे पथभ्रष्ट कर डालते हैं। उदाहरण के लिए हम सभी महाभारत के दो पात्रों- दुर्योधन और कर्ण को अच्छा नहीं समझते। ऋषि दयानन्द जी महाराज ने दुर्योधन को- **'गोत्र हत्यारा'** शब्द से सम्बोधित किया है, किन्तु इसका यह अभिप्राय नहीं कि दुर्योधन और कर्ण में कोई सद्गुण न था। महाभारत में इनके चरित्र के अनुशीलन से विदित होता है कि इनके कुछ गुण बहुत ही असाधारण और मोहक थे। कर्ण की वीरता, सच्चरित्रता और दानशीलता अद्भुत थी। उसी वीरता और उदारता का वर्णन करते हुए व्यास ने लिखा है-

यस्य चेतसि निर्व्याजं द्वयं तूलकणायते।
क्रोधो विरोधिनां सैन्यं प्रसादे कनकोच्चयः।।

जिस कर्ण के चित्त में दो वस्तुएँ एक समान रुई के रेशे की तरह उड़ती रहती हैं। क्या क्या? क्रोध आने पर शत्रुओं की सेना और प्रसन्न होने पर सोने के ढेर, अर्थात् कर्ण उच्चतम कोटि का वीर और दानी है।

अतः मंत्र में पहली प्रार्थना है कि मेरे सद्गुण मेरे जीवन में विकसितहोकर जीवन को यज्ञमय बना दें, ताकि मैं अपना और समाज का भला कर सकूँ।

मन्त्र की दूसरी बात है कि मेरे संकल्प सत्य हों। ऐसा न हो कि मैं व्यर्थ की उधेड़बुन में पड़ा रहूँ, अर्थात् मेरे चिन्तन की दिशा ठीक हो। जब मुझे ठीक विचार करने का अभ्यास होगा तो उसका आचरण भी ठीक ही करूँगा। यदि चिन्तन बेतुका होगा, तो उसके फल का ठीक ठीक होने का प्रश्न ही कहाँ उपस्थित होता है? महत्त्वाकांक्षाएँ तो मस्तिष्क में भले ही रहें, किन्तु अपनी योग्यता और क्षमताओं के अनुसार ही वे क्रियान्वित हो पाती हैं, अतः मनुष्य को संतुलित विचार का अभ्यस्त होना चाहिये, तभी मानसिक शान्ति भी रह सकती है।

मन्त्र की तीसरी बात है कि कोई दोष अनजाने मेरे जीवन में रह जाय, यह सम्भव है, पर जान लेने पर कि यह बुराई है- फिर चाहे कुछ हो जाय, मैं उसे सर्वस्व बाजी लगाकर भी समाप्त करके ही छोड़ूँगा। पाप को पाप जनते हुए आचरण करना जीते जी मरने समान है, अतः मेरी इच्छशक्ति इतनी प्रबल होनी चाहिए कि वीर के समान डटकर मैं उस पाप को जीवन में से निकाल फेंकूँ। मृत्यु स्वीकार हो, किन्तु पापमय जीवन नहीं।

अब मन्त्र की चौथी और अन्तिम बात आई कि- हे संसार के बुद्धिमान् व्यक्तियों! आप जानी हुई सचाई और अच्छाई का प्रचार करें। प्रचार के बिना वह अच्छाई केवल चाहने से नहीं फैलेगी। यह एक बहुत आवश्यक और विचारणीय विषय है।

मनुष्य एक विचारशील सामाजिक प्राणी है। उस पर अच्छे और बुरे संस्कारों का प्रभाव अवश्य पड़ता है, अतः संसार को सन्मार्ग पर लाने के लिए मनुष्य का पवित्र कर्त्तव्य है कि वह शुभ विचारों का सन्देश दूसरों को देता रहे। यदि इस आवश्यक कर्त्तव्य की उपेक्षा की जायेगी तो कपिल मुनि के शब्दों में- **'उपदेश्योपदेष्टृत्वात् तस्तिद्धिरन्यथान्ध परम्परा'** (सांख्यदर्शन)- अच्छे वक्ता व श्रोता शुभ कर्मों के मार्ग को प्रशस्त करे के लिए सद्विचारों के प्रचार में लगे रहते हैं तो संसार में धर्म की वृद्धि होती है, अन्यथा अज्ञान के अंधेरे में स्वार्थ-सिद्धि और भोग का वातावरण तैयार हो जाता है। *(श्रुति सौरभ से साभार)*

thearyasamaj.org

दयानन्द चरितम्

-आचार्य दीपंकर, मेरठ

छन्द-७७

दृषद्वृष्टिर्घोरा जगति भविता नः सुममयी
प्रसारा गालीनामपि च भवितारो जयरवाः।
व्रणस्पर्शे वैद्यं प्रलपति तु रोगी प्रकुपित
स्तथेदं राष्ट्रं नो यतिरुपदिशन्नो विजयते।।

हे संन्यासी !
अपने विरोधियों को क्षमादान
करते हुए तुमने
देशवासियों को समझाया था-
"आज जो लोग पत्थर बरसाते हैं,
कल वे पुष्प-वर्षा करेंगे।"
"आज जो गालियाँ देते हैं,
कल वे जय-जयकार भी करेंगे।"
"वैद्य के घाव छूने पर जैसे
कुपित रोगी प्रलाप करता है,
वही स्थिति हमारे देश की है।"
इस प्रकार,
हम अज्ञानियों को आश्वस्त
करने के लिए
उपदेश देने वाले हे योगी !
तेरी जय हो।

('दयानन्द चरितम्' से साभार, क्रमशः)

होता सदस्य परिचय-50

जिन पर देश को गर्व है

वेद विदुषी डॉ. शान्तिदेव बाला

[ईशावास्योपनिषद् का व्याख्या-ग्रंथ पूरा करने वाली ८८ वर्षीया डॉ.शान्तिदेव बाला पर लखनऊ गर्व और गौरव अनुभव कर सकता है, जिन्होंने प्रतिभा और साधना के बल पर वह कार्य किया है; जो आजतक किसी भी महिला द्वारा नहीं हो पाया। प्रस्तुत है डॉ.शान्तिदेव बाला की जीवन यात्रा के संस्मरण उन्हीं के शब्दों में। -सम्पादक]

(1) मेरा जन्म एक शिक्षित, उदारचेता, राष्ट्रप्रेमी पंजाबी परिवार में हुआ। परबाबा श्री चोयथराम मेहतानी ने स्वामी दयानन्द के प्रभाव में आकर मुल्तान की लोधरां तहसील के अपने ग्राम कहरोड़ पक्का में एक बड़ा भूखण्ड दान में दिया, जिस पर एक भव्य विशाल आर्यसमाज मन्दिर बना और इसी भूखण्ड से जुड़ा हमारा मुहल्ला दयानन्द पुरा बना। प्रथम विश्व महायुद्ध में भाग लेकर जब बाबा मुंशी गिरधारी लाल वापिस लौटे तो 1919 से 1947 तक वे इस आर्य समाज के अध्यक्ष रहे। बाबा उर्दू, फारसी के जानकार तो थे ही, आर्य समाज के प्रभाव में आकर उन्होंने हिन्दी तथा संस्कृत भाषा में अच्छी महारत हासिल की। उनकी अध्यक्षता में यह आर्यसमाज, सामाजिक राजनीतिक तथा वैदिक दर्शन के प्रचार प्रसार का केन्द्र बना, अनेकानेक संन्यासियों, आचार्यों, स्वामियों, उपदेशकों, भजनीकों का समागम स्थल रहा। इसी समाज के तत्वाधान में वैदिक कन्या पाठशाला ने कन्या प्रशिक्षण में प्रभावी भूमिका निभाई। बाबा की व्यक्तिगत लायब्रेरी में वैदिक साहित्य पढ़ने का सुअवसर मिला और 1939 में बारह वर्ष की अवस्था में इसी समाज के मंच से मैंने पहला भाषण दिया जो क्रम निरन्तर आज तक चला ही आ रहा है।

(2) मेरे पिता श्री योगेन्द्र सिंह महतानी वाटर वर्क्स इंजीनियर इलाहाबाद की भी अध्यात्मिक अभिरुचि थी और उनकी छोटी लायब्रेरी में कई पुस्तकों के साथ उपनिषदों को पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। घर में दैनिक यज्ञ हवन का नित्य नियम था जो इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्रावास में जाने तक निरन्तर बना रहा। आज से सत्तर वर्ष पूर्व अपनी पांचों पुत्रियों को उच्च शिक्षा दिलाने, विश्वविद्यालय स्तर तक पढ़ाने का अवसर देना एक क्रान्तिकारी कदम था।

मेरा विवाह भी एक आर्यसमाजी परिवार में हुआ, श्रद्धेय श्वसुर श्री रामचन्द्र जी की पं.गंगाप्रसाद उपाध्याय जी से प्रगाढ़ मैत्री थी, पारिवारिक सम्बन्ध थे। उनसे तथा स्वनामधन्य स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती जी का सान्निध्य प्राप्त हुआ और कुछ उनके सान्निध्य में, कुछ स्वतंत्र रूप से सम्पूर्ण उत्तर भारत के आर्य समाजों के मंच से अपने विचार व्यक्त करने का सुअवसर मिला। वैदिक विचार धारा के प्रसार में इलाहाबाद, वाराणसी, प्रतापगढ़, कानपुर, कानपुर का देहाती क्षेत्र, बरेली, मुरादाबाद, गोरखपुर, टाण्डा, रायबरेली, कलकत्ता, नरकटियागंज ओर अनेकानेक आर्य समाजों के मंच से विचार व्यक्त किये, अधिवेशनों में भाग लिया, विचार गोष्ठियाँ चलाई, राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों में बोलने और अनेकानेक महिला सम्मेलनों की अध्यक्षता करने का सुअवसर मिला। उत्तर प्रदेश के अलावा पंजाब, मध्यप्रदेश, राजस्थान तथा दक्षिण भारत के अनेक नगरों के आर्यसमाज के मंच से वैदिक विचारधारा का प्रचार प्रसार किया। कई डी.ए.वी.पोस्टग्रेजुएट कालेजों के विशिष्ट अधिवेशनों में मुख्य वक्ता के रूप में स्वामी दयानन्द के वैदिक दर्शन की व्याख्या की। कई विशिष्ट शिविरों में भाग लिया यथा रांची डीएवी कालिज तथा आर्य समाज के संयुक्त अधिवेश में वनवासी सेवा शिविर में 21 दिन तक लोहरदगा, रांची के वनवासी क्षेत्रों में सेवा की, मोतियाबिन्द शिविरों के संचालन में सहयोग किया। महात्मा नारायण स्वामी के आश्रम रामगढ़ तल्ला में योग एवं चिन्तन शिविर में दस दिन भाग लिया। इस प्रकार आर्य समाज से सदैव जुड़ाव रहा।

(3) मेरे लगभग सौ लेख परोपकारी, आर्यजगत, आर्य लोक वार्ता, विभिन्न दयानन्द स्मारिकाओं में, Dayanand Commomeration Volumes में, The Jornal of the International Dayanand Ved-Peetha तथा कई अन्य पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए।

मेरा शोध ग्रन्थ 'Swami Dayanand and Indian Nationalism' संयुक्त राज्य अमेरिका की बेस्ट सेलर सूची में रहा है।

'आर्य समाज तथा अंध विश्वास' एवं 'नारी की सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना' स्वामी सत्यप्रकाश प्रतिष्ठान आर्य समाज रायबरेली से प्रकाशित हुई है। विष्णु सहस्रनाम की व्याख्या जिसमें नामों की विवेचना मूल अर्थों में की गई है अत्यंत चर्चित रही। इस समय 'ईशावास्य उपनिषद' की व्याख्या का काम पूरा हो चुका है। आर्य जगत के प्रख्यात प्रकाशक श्री घूड़मल प्रहलाद कुमार आर्य धर्मार्थ न्यास, हिण्डौन सिटी (राज.) जिसको प्रकाशित कर रहे हैं।

(4) उपनिषदों पर वर्ग चलते रहते हैं। ईशावास्य पर कई बार हो चुके हैं। छान्दोग्य एवं बृहदारण्यक को छोड़क अन्य नौ उपनिषदों पर मैंने वर्ग लिए हैं जिनमें उपस्थिति काफी रहती है। सब प्रभु कृपा से संभव हो सका। उसे कोटिशः धन्यवाद।

(शान्तिदेव बाला,
विशेषज्ञ अन्तर्राष्ट्रीय राजनय
४२३सी, सेक्टर-बी, महानगर, लखनऊ)

सत्संग

जिज्ञासा और समाधान

जिज्ञासा : (1) वैदिक संध्या प्रातः व सायं करते हुए अंगस्पर्श करने का विधान आर्ष पुस्तकों में दिया है- परन्तु यह देखने में आया है कि अंगस्पर्श भव्य समारोहों, वार्षिकोत्सवों या दैनिक-साप्ताहिक यज्ञों में सन्ध्या करते समय नहीं होता। (2) 'अथ समर्पणम्' (हे ईश्वर दयानिधे...) तथा 'नमस्कार मंत्र' (नमः शम्भवाय च...) का उच्चारण क्या हमें दोनों हाथ जोड़कर करना चाहिए ?

-पात्र प्रतीक,
योगाश्रम, अलीगंज, लखनऊ

समाधान : (अ) वैदिक संध्या के दो भाग हैं- प्रथम में वाह्य क्रियायें हैं और द्वितीय में आन्तरिक क्रियाएँ हैं। प्रथम भाग- आचमन, इन्द्रिय स्पर्श, मार्जन मंत्रों में जल की आवश्यकता पड़ती है। द्वितीय भाग अर्थात् अघमर्षण (ऋतं च सत्यंम् से लेकर नमस्कार मंत्र तक) की सभी क्रियाएँ आन्तरिक हैं। 'वैदिक संध्या' पूर्ण तभी होती है जब उभय क्रियाएँ विधिवत् सम्पन्न की जाँय।

(ब) समारोह अथवा उत्सव आदि में 'संध्या' पाठ प्रदर्शनात्मक अथवा प्रचारात्मक होता है। यदि इसमें वाह्य क्रियाएँ अथवा जल का प्रयोग नहीं हो पाता है तो भी 'संध्या वंदन' किया जा सकता है क्योंकि वाह्य क्रियाएँ- देश काल परिस्थिति पर निर्भर होती हैं। इस संबन्ध में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज की व्यवस्था इस प्रकार है-

(i) परमेश्वर का ध्यान करते समय किसी प्रकार का आलस्य न आवे इसलिए सिर नेत्र आदि पर जल प्रक्षेप करें- यदि आलस्य न हो तो न करें।(पंच महायज्ञ)

(ii) मार्जन अर्थात् मध्यमा और अनामिका अँगुली के अग्रभाग से नेत्रादि अंगों पर जल छिड़कें, यदि आलस्य न हो तो न करें। (सत्यार्थ प्रकाश, तृतीय समुल्लास)

(स) 'संध्या' के संबन्ध में महर्षि ने लिखा है कि सन्ध्योपासन योगसाधना की भाँति करें। अंगों के संचालन- हाथ जोड़ने इत्यादि क्रियाओं से परमेश्वर के सम्यक् ध्यान में अथवा चित्त की एकाग्रता में व्यवधान पड़ता है। अतएव हाथ जोड़ने या झुकने मुड़ने का 'संध्योपासना' में कोई निर्देश नहीं किया गया है जिससे चित्त की एकाग्रता में व्यवधान पड़े तथापि नमस्कार मंत्र सबसे अंत में है और अंत में स्वाभाविक रूप में हमारे हाथ अभिवादन की मुद्रा में परस्पर जुड़ जाते हैं और परमेश्वर के साथ ही सभी को नमस्कार करने लगते हैं। एक उपासक की अहंकार शून्यता का यह प्रमाण है। इसमें उपासक की विनम्रता तथा शिष्टता का बोध होता है। नमस्कार मंत्र में हाथ जोड़ लेने में कोई अनौचित्य नहीं है। -सम्पादक

वाचनालय से

'अमर उजाला' दैनिक के ४ जनवरी २०१५ के अंक में 'नमस्कार' स्तम्भ के अन्तर्गत श्री यशवन्त व्यास ने करोड़ों के क्लब में शामिल हो चुकी फिल्म 'पीके' का निहितार्थ तलाशने की ईमानदार कोशिश की है। 'बाजार ध्वस्त, पीके मस्त' शीर्षक से श्री व्यास लिखते हैं- 'ईश्वर के नाम पर चल रहे पाखण्ड को उड़ाती 'ओएमजी' या 'ओह माई गॉड' टैक्स फ्री लायक नहीं समझी गई मगर 'पीके' पर्याप्त कमाई कूट चुकी और छोटे-मोटे संगठन 'हिन्दू-हिन्दू' चिल्लाने लगे, तो भाजपा और मोदी के मारे बिहार और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्रियों को लगा- अरे, यह तो धर्म निरपेक्षता को बचाने का अच्छा मौका है, और 'पीके' को टैक्स फ्री कर दिया गया?'

'पीके' शब्द का अर्थ भले ही 'हम पीके आये' अर्थात् पीने-पिलाने से संबन्धित प्रतीत होता हो किन्तु शायद 'पीके' का असली अर्थ तो फिल्मकार के जेहन में है। पी (पा) के (क) यानी 'पाक'। पाकिस्तान को बहाने से या चतुराई के साथ महिमामंडित करना 'पीके' का असली मंशा प्रतीत होता है। ऐसे समय में जबकि पाकिस्तान एक शत्रु राष्ट्र के रूप में सरहदों पर भीषण गोलाबारी कर रहा हो, हमारे नौजवानों बुजुर्गों और महिलाओं के खून की होली खेल रहा हो, पाकिस्तान और उसकी एम्बेसी को ईमानदार, साफसुथरा, शान्तिप्रिय, सहिष्णु चित्रित किया जा रहा हो, तो इसे आप क्या कहेंगे? इस चालबाजी पर पर्दा ढांकने के लिए पेशबंदी के तौर पर श्री लालकृष्ण आडवाणी का प्रमाणपत्र भी चस्पा कर दिया गया हो (आडवाणी जी के पाकिस्तान के प्रति साफ्ट कार्नर से सभी वाकिफ हैं) तो इसे आप क्या कहेंगे? जब पाकिस्तान लगातार झूठ बोलने का रिकार्ड कायम कर रहा हो, आतंकवादी गतिविधियों में, धोखा, फरेब, जालबट्टे में मुस्लिम युवकों के लगातार नाम आ रहे हों और -'पीके' का नायक एक हिन्दू लड़की से कह रहा हो- 'मुसलमान धोखेबाज होते हैं, यह किसने सिखाया?' तो आप इसे क्या कहेंगे?

हिन्दू धर्म के ठेकेदारों, संत-महन्तों मठ-मन्दिरों के अनाचार की पोल खोलने वालों को एक बार भी मुस्लिम पर्वों पर खुदा के नाम पर काट दिये जाने वाले करोड़ों बेजुबान जानवरों पर निगाह क्यों नहीं गई? आतंकवादियों द्वारा जब एक पूरी ट्रेन विस्फोट से उड़ा दी जाती है और आतंकवादी कार्यवाही के जिम्मेदार किसी सिमी या लश्करे तैयबा या हिजाबुल मुजाहिदीन की चर्चा तक नहीं होती है वरन् प्रकारान्तर से इसे एक हिन्दू साधु तपस्वी की गतिविधि से जोड़ दिया जाता है- तो इसे आप क्या कहेंगे? एक सात्विक हिन्दू परिवार (परीक्षित साहनी) में एक मुस्लिम युवक को दामाद बना दिया जाता हो और उसका नाम परिवर्तन या शुद्धि संस्कार भी नहीं किया जाता हो- तो इसे आप क्या कहेंगे? अनेक ऐसे सवाल जो यशवंत व्यास ने अपने लेख में उठाये हैं, उनके आधार पर यह सवाल उठता है कि आखिर 'पीके' फिल्म की मंशा क्या है और इसके निर्माण और प्रदर्शन में किस ऐजेन्सी का हाथ है?

'दैनिक जागरण' (१२.०१.१५) ने जगद्गुरु स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती का यह मन्तव्य प्रकाशित किया है कि हिन्दुओं को ज्यादा बच्चे पैदा करने की तालीम देना कदापि उचित नहीं है। जनसंख्या का असंतुलन दूर करने के लिए सरकार को समान सिविल कोर्ट की स्थापना करनी चाहिए, जिसमें हिन्दू हो या मुसलमान सबके लिए समान कानून और अधिकार होने चाहिए। जगद्गुरु ने कहा जो गलती से या प्रलोभन या जोर जबर्दस्ती से दूसरे धर्म में चले गये हैं, उन्हें सनातन धर्म में शामिल करने में कोई गुरेज नहीं है बशर्ते उनका शुद्धिकरण हो और लिखित ले लिया जाय कि वे पुनः दूसरा धर्म स्वीकार नहीं करेंगे। स्वामी जी ने कहा कि वे लाखों ऐसे लोगों को अपने झारखंड स्थित विश्व कल्याण आश्रम में बिना किसी हल्ला या प्रोपगंडा के हिन्दू धर्म में जोड़ चुके हैं और यह प्रक्रिया अनवरत चलती रहेगी।

जगद्गुरु ने कतिपय हिन्दू संगठनों द्वारा नाथूराम गोड्से का मंदिर बनाने की मांग का कड़ा विरोध किया। उन्होंने कहा सनातन धर्म में अहिंसा ही परम धर्म माना गया है। गोड्से ने निहत्थे महात्मा गांधी पर गोली चलाकर उनकी हत्या की, यह कोई वीरता नहीं है। ऐसे किसी व्यक्ति का मंदिर बनाना किसी रूप में उचित नहीं है।

('आर्य लोक वार्ता' न्यूज डेस्क)

पृष्ठ 1 का शेष.....

देश में.....

अखण्ड भारत में ईसाइयों के उतने मिश्नरी यहां नहीं थे जितने आज खण्डित भारत में हैं। अभी पीछे सूरत में सर थामस की शताब्दी मनाते हुए भारत के प्रसिद्ध पादरी ने यह शब्द नेहरू जी की डिस्कवरी आफ इण्डिया (भारत की खोज) नामक पुस्तक का उद्धरण देते हुए कहा ईसाइयत की आज के भारत की एक आवश्यक मांग है। केवल धर्म प्रचार ही उनका भी उद्देश्य होता और मन्दिरों आदि को बिना गिराये यदि वह शान्ति से चलता रहता तब तो कुछ देर को सह्य भी हो सकता था परन्तु जब ईसा और येरुशलम की ओर उनकी भी आंखें लगी हुई देखते हैं तो चिन्ता होनी स्वाभाविक है। अभारतीयता सबसे बड़ा पाप है चाहे वह हिन्दू में हो या मुसलमान में, ईसाई में हो या यहूदी में हो, भारत में रहकर अपने राष्ट्र धर्म को कभी न भूलना भी एक महान् कर्त्तव्य है।

('मेरे सपनों का भारत' से साभार)

thearyasamaj.org

शुभाकांक्षा

स्वामी श्रद्धानन्द और महात्मा गाँधी जैसी दिव्यात्माओं की मातृभूमि हित प्राणोत्सर्ग की प्रेरक गाथा, सुधासिक्त वेदमंत्रों का ललित काव्यानुवाद, वैदुष्यपूर्ण साहित्यिक एवं गवेषणात्मक सम्पादकीय तथा जिज्ञासा एवं समाधान वस्तुतः उच्च सात्विक-साहित्यिक शंखनाद है।

विद्वत्जनों की 'शुभाकाँक्षाएँ', 'मनुष्य का विराट रूप' एवं 'अनन्त की खोज' जैसी प्राणद लेखमालाओं के साथ साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों से सुसज्जित 'आर्य्य लोक वार्ता' के दिस. १४ के अंक ने नव्य उल्लास एवं ऊर्जा का संचार कर दिया है। पत्र की 'काव्यायन' वीथिका तो विशिष्ट मुग्धकारी है ही। ऐसे उत्कृष्ट सम्पादन को हमारा नमन!

-रामकुमार गुप्त
निकट-मंगलादेवी मंदिर, गोला गोकर्णनाथ-खीरी

***

'आर्य लोक वार्ता' का दिसम्बर, २०१४ अंक प्राप्त हुआ, धन्यवाद! पढ़कर हर्ष हुआ। प्रमुख लेख 'महात्मा गांधी स्वामी श्रद्धानन्द के चरणों में सर झुकाना अपना फर्ज समझते थे' अच्छा लगा। आर्यों की वास स्थली से संबन्धित सम्पादकीय अनेक उदाहरणों से युक्त है, जिसमें संस्कृत श्लोक, प्रसाद जी की कविता 'भारतवर्ष', गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की कविता, डॉ.इकबाल मोहम्मद की 'बागेदरॉ' पुस्तक आदि के उद्धरण लिखा गया बहुत ही प्रभावकारक है। इस अंक में लेख जहां ज्ञानालोक प्रसारक हैं वहीं कवितायें अतीव अहलादकारक व समाचार जानकारी विस्तारक। आर्य धर्म संबन्धित अच्छी व उपयोगी साहित्य सामग्री से उक्त अंक अतीव ज्ञानवर्द्धक है। उत्तम अंक के प्रकाशन हेतु बहुत-बहुत साधुवाद।

-दयानन्द जड़िया 'अबोध'
३७०/२७, हाता नूरवेग, सआदतगंज, लखनऊ

***

'आर्य लोक वार्ता' पढ़कर हमें अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। आपके पत्र में जहाँ सांस्कृतिक विषयों पर सुंदर प्रकाश डाला जाता है, वहाँ साहित्य से सम्बन्धित सभी विधाओं को स्थान दिया जाता है। साहित्य और संस्कृति का ऐसा संगम कदापि कहीं बिरले देखने को मिलेगा। २०१५-नूतन वर्ष के अवसर पर हम 'आर्य लोक वार्ता' का हार्दिक अभिनन्दन करते हैं तथा अपनी बधाइयाँ और शुभकामनाएँ प्रेषित करते हैं।

-अवधेश शुक्ल-अध्यक्ष, विनोदिनी रस्तोगी-उपाध्यक्ष, गोपाल सागर-मंत्री
हिन्दी साहित्य परिषद, ब्रह्मपुरी, सीतापुर

***

श्रद्धेय सतीश निझावन जी तथा आदरणीय डॉ.वेद प्रकाश आर्य द्वारा प्रेषित 'ऊर्मिला स्मृति मणिदीप' पढ़ा। यह अपने आप में विशेष गरिमायुक्त है। दिवंगत पुण्यात्मा श्रीमती ऊर्मिला देवी जी के प्रति आपकी ओर से तथा परिवार के सुहृद सदस्यों की ओर से भावभीनी जो श्रद्धांजली दी गई है, वह अत्यंत प्रेरणाप्रद है। स्वर्गीया ऊर्मिला देवी जी का जीवन परिवार तथा समाज के लिए परोपकारमय, गरिमाशाली एवं प्रेरणाप्रद रहा है। वह देवी अपने यश रूपी शरीर से सदैव स्मरण रहेंगी। पुस्तक के दूसरे भाग में आपने मानव जीवन के मुख्य उद्देश्य के रूप में जिन कल्याणकारी विषयों को प्रस्तुत किया है वे अद्भुत हैं। जैसे-आत्मा, भक्तियोग, कर्म, यज्ञ तथा पुरुषार्थ चतुष्टय को निश्चय ही जीवन में अपनाना चाहिए। इसकी प्रेरणा है। पुस्तक के तृतीय भाग में सतीश निझावन जी ने अपने चिन्तन परक कुछ सुन्दर, सारगर्भित भजनों को स्थान दिया है जिनको गाने से नीरस जीवन में रस घुल जाता है। पुस्तक सम्पादन का प्रयास निश्चय ही सराहनीय है।

-सुदेश आर्या, आर्योपदेशिका
-आचार्य भगवानदेव वेदालंकार
अखिल भारतीय वैदिक विदुत परिषद, दिल्ली

***

'आर्य्य लोक वार्ता' के दिसम्बर, २०१४ में मुख पृष्ठ पर महात्मा गाँधी विषयक लेख विशिष्ट, सारगर्भित एवं असरदार है। पृष्ठ-२ पर आपका सम्पादकीय 'कहीं से हम आये थे नहीं' अत्यन्त महत्त्वपूर्ण, खोजपूर्ण, ज्ञानवर्द्धक, रोचक एवं अनूठा है, जिससे यह तथ्य उजागर होता है कि मानव सभ्यता का प्रादुर्भाव तिब्बत में हुआ था, जहाँ से आर्य जाति शनैः शनैः संसार में फैलती गई। ऐसे महत्त्वपूर्ण उपयोगी एवं संग्रहणीय सम्पादकीय की प्रस्तुति के निमित्त आप वास्तव में बधाई के पात्र हैं। अन्य लेख भी पूर्ववत् प्रभावी एवं पठनीय हैं। 'काव्यायन' के अन्तर्गत रचनाएँ प्रायशः बहुत खूब हैं। पढ़कर आनन्दित हुआ। अनेक महत्त्वपूर्ण समाचारों की भी जानकारी हुई।

-डॉ.मिर्ज़ा हसन नासिर
जी-०२, लोरपुर रेजीडेंसी, न्यू हैदराबाद, लखनऊ

***

अक्टूबर-नवम्बर आर्य लोक वार्ता अंक में आचार्य राजवीर शास्त्री का राम विषयक आलेख अत्यंत सारगर्भित है। राम मर्यादापुरुषोत्तम थे अतः मानवोचित सद्गुणों को जीवन में उतारना ही सद्मार्ग दिखा सकता है किन्तु राम राज्य जैसा वातावरण, शिक्षा तथा समरसता का आज अभाव है। सम्पादकीय में आपने मोदी की चर्चा की है। यदि सचमुच देश में सुधार हो जाए तो आदर्श सुशासन की स्थापना हो सकती है। बकरीद में बकरों की बलि बन्द हो तथा गोवध बन्द हो जाए तो भारत में धर्म का राज्य होगा।

मानव सबसे श्रेष्ठ तब, जब बन जाए आर्य।
दयानन्द की सीख ले, करे सदा सत्कार्य।

'वेदांजलि' तथा 'सत्यार्थ प्रकाश वार्ता' से सत्यज्ञान प्राप्त हो रहा है जो जीवन की उन्नति में सहायक है। 'काव्यायन' में स्वामी दयानन्द से सम्बन्धित आचार्य सत्यम, गौरीशंकर वैश्य विनम्र, जय प्रकाश शुक्ल, विद्रोही तथा सूफी फकीर रहीम बख्श की कविताएँ हृदय को छूती हैं। रचनाओं के कुशल चयन के लिए आप बड़ा परिश्रम करते हैं। शुभाकांक्षा में मेरे पत्र को आपने स्थान दिया है, इसके लिए मैं आभारी हूँ। अंग्रेजी के नववर्ष हेतु बधाई! *-सविता वाणी*

गौरीगंज, अमेठी जनपद (उ.प्र.)

***

'आर्य लोक वार्ता' संयुक्तांक अक्टूबर नवम्बर के अग्रलेख 'श्रीराम भक्तों ने उनके चित्र को अपनाया है, चरित्र को नहीं' अत्यंत सार्थक एवं सद्चिन्तन पूर्ण प्रस्तुति लगी। इसके लेखक आचार्य राजवीर शास्त्री का निधन संदेश हृदय द्रावक है। उनके इस विद्वत्तापूर्ण आलेख श्रद्धांजलि के रूप में नमन। निस्संदेह श्रीराम आर्यजाति के आदर्श हैं। उनका त्याग, शील, संघर्ष, सत्य सदाचरण, सुशासन आदि सद्गुण मानक रूप में सदैव अनुकरणीय रहेंगे। रामराज्य की संस्थापना के लिए श्रीराम की अवधारणा को मूर्तिमान करना होगा। सम्पादकीय में आपने जिन तर्कों पर आधारित 'मोदी जी मुझे प्रिय हैं' वह सभी को सहज मान्य है तथापि अधोगामी प्रतिगामी प्रवत्तियों को ऊर्ध्वगामी दृष्टि से समझना होगा। इसी सन्दर्भ में कबीर दास पहल ही कह गये हैं 'अरे इन दोउन राह न पाई'। श्री सतीश निझावन की सहधर्मिणी विषयक 'ऊर्मिला स्मृति मणिदीप' स्मारिका से सम्बन्धित अनेक विद्वानों के अभिमतों कृति की सार्थकता स्वतःसिद्ध है परन्तु इसके प्राप्तिस्थान तथा मूल्य की जानकारी भी दें। 'मनुष्य का विराट रूप' शृंखला में मानव-धर्म की सुचिन्तनपूर्ण शिक्षा प्रदान की जा रही है। इसी प्रकार 'अनन्त की खोज' व्याख्यानमाला भी संजोने योग्य है। यह पृष्ठ विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण होने के कारण संग्रहणीय बन गया है। 'काव्यायन' के कविमित्रों की रचनाओं के साथ दामोदर स्वरूप विद्रोही और सूफी फकीर रहीमबख्श की काव्यांजलि प्रशंसनीय रही। महात्मा गांधी को 'महात्मा' के पद से सुशोभित करने वाले सबसे पहले महात्मा मुंशीराम का पुण्यस्मरण २३ दिसम्बर को अनायास हो रहा है- उन्हीं को समर्पित कुछ शब्द-

तेईस दिसम्बर पुण्य दिवस,
हुए स्वामी श्रद्धानन्द अमर।
'कल्याण मार्ग का पथिक' रचा,
तज कुपथ सुपथ पर ही चलकर।
मानसिक दृष्टि से जब आए,
ऋषि दयानन्द उनके सम्मुख।
आजीवन जिए देशहित में,
प्रिय मुंशीराम आर्य बनकर।।

-गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
११७, आदिलनगर, विकास नगर, लखनऊ

***

'आर्य्य लोक वार्ता' हम सभी बहुत रुचि से पढ़ते है अगले अंक की प्रतीक्षा करते रहते हैं। दिसम्बर २०१४ का अंक प्राप्त होते ही पढ़ना शुरू कर दिया। इस अंक का सम्पादकीय बेजोड़ है और उक्त कथन-नारे-जयघोष को चरितार्थ करता है कि 'आर्य लोक वार्ता पत्र नहीं, स्वाध्याय है-एक नया अध्याय है।'

'कहीं से हम आए थे नहीं' क्रान्तिकारी सम्पादकीय में प्रधान सम्पादक जी ने जो तथ्य प्रस्तुत किए हैं, उन पर चर्चा पुनः शुरू हो गई है। अब तो आवश्यकता है इस विषय पर गोष्ठियों के आयोजनों की, क्योंकि यदि दो या तीन सज्जन बुद्धिजीवी इस विषय पर चर्चा-विमर्श करेंगे तो वे एक दूसरे के मत को मानेंगे नहीं काटते रहेंगे। ऐसे अज्ञानी जो सृष्टि की रचना का समय १९०८५३११५ नहीं मानते, ऋग्वेद व अन्य वेदों की उत्पत्ति का सही समय वर्ष नहीं मानते व जो वेदों को ईश्वर कृत अपौरुषेय नहीं मानते वह यह कैसे मानने को तैयार हो सकते हैं कि आदि मानव का जन्म व अन्य मानव जाति की उत्पति का स्थान तिब्बत भारत भूमि ही है। वे तो यही तर्क देते हैं कि आर्य तो बाहर से आए थे और भारत में आकर बस गये। किन्तु दिसम्बर २०१४ के अंक के 'सम्पादकीय' की प्रत्येक पंक्ति इतनी ज्ञानवर्द्धक है व हमारे स्वाभिमान, भारत भूमि के गौरव को, गौरवशाली इतिहास को पुनः जागृत करने वाली है जिसकी जितनी भी सराहना की जाए- कम होगी। हम आर्य हैं या अनार्य हैं, आर्य श्रेष्ठ है या द्रविड़ श्रेष्ठ है- इन विवादों में पड़ना श्रेयस्कर नहीं है किन्तु हमें विद्या व अविद्या में अन्तर अवश्य समझ लेना चाहिए- वैदिक या पौराणिक में कौन श्रेष्ठ है? वेदमार्ग पर चलना श्रेयस्कर है या पौराणिक मान्यताओं पर चलना ठीक है- इस पर हम सभी को विचार करना चाहिए। अभी नहीं करेंगे तो आने वाले चार-पांच वर्षों में हमें एक निष्कर्ष पर पहुंचना आवश्यक होगा। यह सत्य है कि हमारा देश भारतवर्ष समस्त विश्व का गुरु रहा है जिसके प्रमाण प्रख्यात साहित्यकारों, कवियों व दार्शनिकों ने अपनी प्रस्तुतियों में दर्शाए हैं। यथा श्री जयशंकर प्रसाद, स्वामी विद्यानन्द सरस्वती, डॉ.इकबाल मोहम्मद, गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर एवं श्री मैथिलीशरण गुप्त आदि। आर्य लोक वार्ता के इस अंक के सम्पादकीय में उक्त महान आत्माओं की रचनाओं को सभी पाठकों ने पढ़ा है। मेरा विचार है कि अधिक से अधिक पाठकों के मत भी वही होंगे हमारी मातृभूमि व संस्कृति के विषय में। इन विचारों को दूर दूर तक अन्य प्रदेशों देशों में फैलाना हमारा कर्त्तव्य है जिससे कि भ्रमित लोग भी अपना मत बदलें।

आर्य लोक वार्ता में प्रकाशित अन्य स्तम्भ 'वेदांजलि', 'दयानन्द चरितम्', 'मनुष्य का विराट रूप', 'अनन्त की खोज' आदि सभी सशक्त हैं। 'काव्यायन' के अन्तर्गत सभी कविताएं बहुत ही सामयिक हैं। श्री जयप्रकाश शुक्ल जी की रचना 'ऋषितुल्य नानाजी आचार्य देवदत्त वैद्य' को पढ़कर मन आनन्दित हो गया। श्री शुक्ल जी को बधाई व धन्यवाद। आर्य लोक वार्ता की निरन्तर प्रगति की कामना के साथ-

-श्रीमती कमलेश पाल
एम.एस.१२०, से.-डी, अलीगंज, लखनऊ

***

आर्य लोक वार्ता दिसम्बर अंक के प्रथम पृष्ठ पर विशेष श्रद्धानन्द बलिदान दिवस से प्रेरित होकर सभी पाठक व पाठिकाओं के समक्ष यह स्पष्ट कर दिया कि महात्मा गांधी श्री स्वामी श्रद्धानन्द के चरणों में सर झुकाना फर्ज क्यों मानते थे। स्पष्ट है कि छोटे भाई ने अपने बड़े भाई का हू ब हू कितना अनुगमन किया, भ्रांत व्यक्ति का निशाना बनकर बड़े भाई ने शहादत पाई। उसी प्रकार छोटे भाई ने भी भ्रांति व्यक्ति की गोलियों का शिकार बनकर पदानुगमन किया और दिल्ली की यमुना नदी दोनों भाइयों की साक्षी है। सम्पादकीय में 'कहीं से हम आये थे नहीं' अधिकांश जिज्ञासु मानवों में यह भ्रांति रहती है। उसका समाधान आवश्यक था। इस विषय पर मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रकाश डाला गया है। जिज्ञासु को यह लेख पढ़कर पूर्ण संतुष्टि और समाधान प्राप्त होगा। 'वेदांजलि' में पं.शिवकुमार शास्त्री का मंत्र बहुत ही उत्तम है। इसको कंठाग्र कर लेना चाहिए और अर्थों को जान और समझकर उस परम पिता परमात्मा से मित्रता बढ़ाने में प्रयत्नशील रहना चाहिए। 'मनुष्य का विराट रूप' तो सदा मनुर्भव का संदेश देता है और इस प्रकार वह हमारा मार्ग दर्शक है। वर्जनीय बातें पर भी प्रकाश डाला है। अतः हमें अपनी बुद्धि से उचित और अनुचित समझ कर मार्ग अनुसरण करना है। महात्मा आनन्द गिरि की व्याख्यानमाला 'अनन्त की खोज' बहुत ही ज्ञानवर्द्धक और सुरुचियपूर्ण लेख है। धीरे-धीरे हमें सुमार्ग की ओर ले जाने वाला लेख है। इसके लिए उन्हें बहुत बहुत साधुवाद। अमृत खरे जी 'वाचनालय से' द्वारा कुछ विशेष खोजपूर्ण और अद्भुत तथ्यों का खुलासा करते हैं। जिसमें अजमेर से निकलने वाली पत्रिका परोपकारी पाक्षिक में कुछ खास है। प्रतिक्रिया के प्रेषक हैं-डा. वी.पी.वैदिक। (हाफिज सईद का साक्षात्कार लेकर आये वेदप्रताप वैदिक)। सम्पादक परोपकारी को भेजे गये मेल की भाषा अत्यधिक अशोभनीय भद्दी एवं शर्मनाक है। बोलने से पहले उचित अनुचित विचार कर लेना अत्यंत आवश्यक है। ऐसे चुभते शब्द कभी भूलकर भी जुबां पर न लाना चाहिये।

'काव्यायन' में सभी कवितायें अपन विशेष स्थान रखती हैं उनमें उमेश राही की कविता 'उड़ गया पंछी' जीवन सार तत्व दर्शाती है, विशेष चित्ताकर्षक है। इसके बाद ऋषि हृदय नाना जी आचार्य श्री देवदत्त वैद्य जी की जिसमें सत्य पावन जीवन की झांकी मिलती है। जय प्रकाश शुक्लकी यह रचना बड़ी ही भावपूर्ण है। विदित हो कि पं.देवदत्त जी वैद्य के सुपुत्र डॉ.वेद प्रकाश आर्य तथा पं.ज्ञानेन्द्र दत्त त्रिपाठी हैं और कवयित्री रमा आर्य 'रमा' उनकी सुपुत्री हैं- सभी समाजसेवा में अग्रसर हैं। इसके अलावा दिनेश मिश्र 'राही' की कविता 'दयानन्द को प्रणाम' हमें विशेष गौरवान्वित करती है।

-प्रमोद कुमारी
एम.एस.३७, से.-डी, अलीगंज, लखनऊ

***

'आर्य लोक वार्ता' के सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य के सौजन्य से मुझे पं.हरिओम शर्मा 'हरि' द्वारा रचित एवं प्रकाशित पुस्तक 'छोटी बातें बड़े परिणाम' देखने और पढ़ने का सुअवसर मिला। यह पुस्तक अत्यन्त सुन्दर और अन्य पुस्तकों से सर्वथा अलग है। इस पुस्तक में जो सूक्तियाँ सूत्र वाक्य के रूप में दी गई हैं- वे अत्यन्त भावपूर्ण, सारगर्भित तथा मनुष्य के मन पर स्थायी प्रभाव डालने वाली हैं। प्रस्तुतीकरण तो नयनाभिराम है। प्रत्येक अक्षर साफ और स्पष्ट है तथा आसानी से पढ़ा जा सकता है। प्रत्येक सूक्ति जिसे हम सुभाषित भी कह सकते हैं, माता, पिता, ईश्वर की भक्ति से परिपूर्ण है तथा मनुष्य को कर्मवीर होने की प्रेरणा देती है। श्री हरिओम शर्मा 'हरि' ऐसी रचना के लिए बधाई के पात्र हैं।

-श्रीमती सरला आर्य
कार्यालयाध्यक्ष, आर्य लोक वार्ता, लखनऊ

***

thearyasamaj.org

धारावाहिक-(50)

मनुष्य का विराट् रूप

-आनन्दकुमार-

२-गुप्त अपराधों का दुष्परिणाम

परिणाम यह है कि गुप्त अपराधों की संख्या बढ़ती जा रही है। इससे व्यक्ति और समाज दोनों की हानि होती है। व्यक्तिगत हानि तो यह होती है अपराधी की आत्मा पतित हो जाती है। उसे सिर पर पाप सवार हो जाता है। दूसरी बात यह है कि यद्यपि अपराधी अपने दोष छिपाकर राजदंड और लोक-निन्दा से बच जाता है, परन्तु भीतर-ही-भीतर वह मानसिक मलबद्धता से घोर कष्ट पाता है। सुप्रसिद्ध विलायती उपन्यास लेखिका मेरी करेली के मत से- 'चरित्र हीन की मानसिक यंत्रणायें नरक की यंत्रणाओं से बढ़कर हैं।' अमोघवर्ष ने भी सत्य ही कहा है-

किं मरणं? मूर्खत्वं, किं वानर्घ्यं? यदवसरे दत्तम्। आमरणात् किं शल्यं? प्रच्छन्नं यत्कृतमकार्यम्।। (प्रश्नोत्तरमाला)

अर्थात्-(जीते जी) मृत्यु क्या है? मूर्खता। अमूल्य क्या है? जो समय पर दिया जाय। जीवनपर्यंत हृदय में काँटे की तरह क्या चुभता है? छिपकर किया गया अपराध।

अपराधी का मनस्ताप उसे भीतर से बहुत दिनों तक जलाता है- यही असली प्राण-दण्ड है। प्रत्येक दोष, चाहे वह छोटा हो या बड़ा, मनुष्य के व्यक्तित्व पर अपना धब्बा अवश्य छोड़ता है। वह गुप्त रोग बनकर शरीर को पीड़ित करता है। क्षणिक सुख से जीवन की स्थायी हानि होती है। इसके अतिरिक्त, व्यास जी के मतानुसार, जिस प्रकार गरिष्ठ भोजन पेट में जाकर अवश्य दुःख देता है, उसी प्रकार पा अपने लिए अनिष्टकर न प्रतीत होते हुए भी बेटे-पोतों तक पहुँचकर अपना प्रभाव दिखाता है-

पुत्रेषु वा नप्तृषु वा न चेदात्मनि पश्यति। फलत्येव ध्रुवं पापं गुरुभक्ति-मिवोदरे।। (आदिपर्व)

गुप्त अपराध से समाज का सारा वातावरण भीतर-ही-भीतर दूषित हो जाता है। जिस प्रकार एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है उसी प्रकार एक दुष्ट व्यक्ति सारे समाज को। उसकी बुराइयों का दुष्प्रभाव उसी प्रकार चुपचाप पड़ता है जैसे क्षय के रोगी के दूषित श्वास का। समाज में जो भ्रष्टाचार फैलता है और अनर्थ होते हैं उनमें उन बुराइयों का मुख्य हाथ रहता है जो मलवत् अन्दर रुकी रहती हैं। अनेक सामाजिक व्याधियाँ उन्हीं से उत्पन्न होती हैं। महाभारत के अन्त में कुन्ती ने इस तथ्य को स्वीकार करके कहा था कि मेरी ही दुर्बुद्धि के कारण यह सारा अनर्थ हुआ। भारती कथा के मर्म को समझने वाले इससे सहमत होंगे।

इस सम्बन्ध में लैफ़ कैडियो हार्न लिखित एक वृत्तान्त उल्लेखनीय है। इसका संक्षिप्त अनुवाद श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ने 'मधुकर' के १ जून, १९४२ के अंक में दिया था। किसी जानानी नगर की एक गली में किसी की हत्या हुई। जहाँ हत्या हुई थी, उससे दूर उसी नगर में एक सज्जन अपने मित्र से मिलने गए। मित्र महोदय किसी बात पर बड़ी देर से बिगड़े हुए थे। आगन्तुक सज्जन ने उनके कमरे में पहुँचते ही कहा-'अभी जो हत्या हुई है, उसके लिए आप भी कुछ अंशों में उत्तरदायी हैं!' मित्र महोदय चौंककर बोले-'न मैं हत्यारे को जानता हूँ न मृत व्यक्ति को; यहाँ बैठा हुआ मैं उस हत्या के लिए कैसे उत्तरदायी हो सकता हूँ?' उक्त सज्जन ने पुनः कहा-'आपने क्रुद्ध होकर अपने मनोविकार से यहाँ के समस्त वायुमण्डल को विषाक्त बना दिया है; ऐसे दूषित वातावरण से हत्यारे को अपने कुकर्म के लिए अवश्य ही कुछ-न-कुछ प्रेरणा मिली होगी।'

समाज की रचना ही इस प्रकार की है कि साधारण-से-साधारण व्यक्ति की दुर्भावनाओं तक का प्रभाव दूसरों पर पड़ता है। उससे अनैतिकता का पोषण होता है। एकान्त में किया हुआ छोटा मोटा पाप भी धीरे-धीरे लोक में फूलने फलने लगता है। उसका दण्ड अन्य सामाजिक प्राणी भोगते हैं। प्रायः यह देखने को मिलता है कि 'खेत चरै गदहा, मारा जाय जोलहा।' अपराध कोई करता है, और दंड कोई दूसरा भोगता है। किसी नीतिकार ने कहा है कि दुराचार तो दुष्ट करता है और उसका फल साधु को भोगना पड़ता है। सीता का हरण रावण ने किया, लेकिन बाँधा गया बेचारा समुद्र।-खलः करोति दुर्वृत्तं नूनं फलति साधुषु। दशाननोऽहरत्सीतां बन्धनं च महोदधेः।।

इस प्रकार समाज में दुष्टों की दुष्टता से निरपराध व्यक्तियों के साथ घोर अन्याय होता है। अनाचार या दुर्विचार को यत्नपूर्वक छिपाने वाले न तो स्वयं अपने साथ कोई उपकार करते हैं और न समाज के साथ। वास्तव में वे दोनों के साथ विश्वासघात करते हैं। कोई भी अपराध या पाप छिपाने से न तो घटता है और न कटता है। गाँधी जी ने कहा है कि दोष को छिपाने में ही उसके संग्रह की इच्छा रहती है।

३-अपराध-चिकित्सा

अब प्रश्न यह है कि अपने को तथा समाज को अपराधों से मुक्त करने का उपाय क्या है? अपराध तो सभी से होते रहते हैं। उनसे कैसे बचा जा सकता है? शास्त्रकारों के शास्त्रकार महर्षि व्यासस ने इसका एक सरल उपाय बताया है। वह यह है कि अपने पाप को प्रकट कर देना चाहिए। उनका कहना है कि अपना पाप लोगों में प्रकट करने से घटता है, पापी का छिपाया पाप उसे पुनः पाप में लगाता है। जो मनुष्य बुरे कर्मों का पश्चात्ताप करता है वह पाप से मुक्त हो जाता है-'विकर्मणा तप्यमानः पापाद्धि परिमुच्यते।'-वनपर्व। मनु ने भी कहा है कि जैसे-जैसे मनुष्य अपना किया अधर्म लोगों में ज्यों-का-त्यों प्रकट करता है, वैसे-वैसे वह अधर्म से उसी प्रकार मुक्त होता है जैसे केंचुली से साँप।

यथा यथा नरोऽधर्मं स्वयं कृत्वाऽनुभाषते। तथा तथा त्वचेवाहिस्तेनाधर्मेण मुच्यते।।

-मनुस्मृति

ईसाइयों के युगान्तरकारी गुरु लूथर का मत है कि मनुष्य अपने को दोषी न माने यही महापाप है। अपने दोष को स्वीकार करके उसके लिए पश्चात्ताप करना पुण्यप्रद है। इससे आत्मशुद्धि के साथ लोकादर्श की भी रक्षा होती है- सत्य और न्याय की मर्यादा स्थापित होती है। सत्य और न्याय यह है कि मनुष्य को अपने अपराध का दंड स्वयं ही भोग लेना चाहिए। हमारे जातीय इतिहास में इसके अनेक उदारहण हैं। उनमें सर्वाधिक गौरवपूर्ण वैदिक धर्म के पुनरुद्धारक प्रख्यात पंडित कुमारिल भट्ट का है। यहाँ, संक्षेप में, उसका उल्लेख कर देना अप्रासंगिक न होगा।

(मनुष्य का विराट् रूप' से साभार क्रमशः)

व्याख्यान माला (9)

अनन्त की खोज

-महात्मा आनन्द गिरि-

न वा अरे वित्तस्य कामाय वित्तं प्रियं भवत्यशत्मनस्तु कामाय वित्तं प्रियं भवति।।

धन के लिए धन प्यारा नहीं होता है आत्मा के लिये धन प्यारा होता है। धन के लिए जीवन नहीं है बल्कि जीवन के लिए धन होना चाहिए।

यह एक साधारण घटना है जो प्रायः देखी और सुनी जाती है। देखने-देखने में अन्तर होता है। इस छोटी सी घटना में जिज्ञासु ने जीवन का सत्य देखा। सत्य का अनुभव किया कि सर्वप्रिय केवल आत्म तत्व है, धन नहीं। धन साध्य नहीं है साधन है। यह अनुभूति भोगा हुआ यथार्थ है। जिससे निकलने वाला सत्य विश्वसनीय और जीवन बदलने वाला होता है, प्राणवन्त होता है। सत्य को पुस्तकों में नहीं खोजा जा सकता। इसके लिए तुम्हें देखना आना चाहिए। यह देखना ही दर्शन और अनुभव है। इस सन्दर्भ में वेद में कहा गया है कि-

'उतत्व पश्यन्न ददर्श'

'तुम देखते हो। तुम्हारा देखना केवल ऐन्द्रिय प्रत्यक्ष है किन्तु तुम दर्शन नहीं कर पाते।' जो केवल इन्द्रियों की अनुभूति तक सीमित है वह पशु है। आचार्य यास्क ने पशु शब्द का निर्वचन किया है-

'पश्यति इति पशवः'

अर्थात् जो केवल ऐन्द्रिय प्रत्यक्ष करता है, इन्द्रियों तक ही सीमित है वह पशु है। प्रायः लोग घटनाओं के स्थूल रूप को ऊपरी सतह से देखते हैं। अगर बुद्धि और ज्ञान से देखा जाय तो जीवन के गम्भीर तथ्य सामने आते हैं। घटना चाहे कितनी भी कष्टप्रद क्यों न हो वह वस्तुतः अज्ञान के पाश को तोड़ती है। वेद की एक ऋचा में तीक्ष्ण आपत्तियों को इसलिए स्तुत्य कहते हैं चूंकि वह भोग की लौह शृंखला को काटती है-

नमास्तुते निऋते तिग्म तेजः....।

ऐ 'तीक्ष्ण द्रंष्ट वाली आपत्तियों तुम्हें नमस्कार है।' भीषण दुःखों, तुम्हारा स्वागत है। तुम भोग की बेड़ियाँ काटकर पाशमुक्त करते हो। तुम्हारे जीवन में आने वाली दुःखद से दुःखद घटना सत्यानुभूति का अवसर प्रदान करती है। इसके लिए तुम्हें केवल ऐन्द्रिय प्रत्यक्ष नहीं अपितु बौद्धिक प्रत्यक्ष करना आना चाहिए।

एक बार किसी ने प्रसिद्ध शेख सादी से पूछा-'तुम्हारा गुरु कौन है? तुम्हें इतना ज्ञान मिला है।' शेख ने सहज उत्तर दिया कि 'मेरे आसपास जितने भी मूर्ख हैं मेरे गुरु हैं। ये लोग मूर्खता पूर्ण कार्य करते हैं। मैं उनकी मूर्खता को और उसके फल को देखता हूँ और अपने अनुभव भी सम्पन्न करता हूँ। इन मूर्खों ने ही मुझे ज्ञान दिया है यही लोग मेरे गुरु हैं।'

देखने से प्रयोजन है- अनुभव करना। अतः घटना को व्यापक सन्दर्भ में आंकना चाहिए। स्वार्थ दायरे में होकर देखने से वह सत्य प्रत्यक्ष नहीं होगा जो सूक्ष्म है और व्यापक है। घटना को व्यापक सन्दर्भ में देखना- दर्शन है। दर्शन जितना व्यापक होगा उतना स्पष्ट होगा और द्रष्टा की अनुभूति उतनी ही तात्विक होगी। जीवन की घटनाएँ ही नहीं अपितु प्रकृति जगत की प्रत्येक गति अपने आप में बड़ी गहरी है। सामान्य व्यक्ति के लिये सूर्योदय और सूर्यास्त साधारण घटनाएँ हैं जो नित्य घटती हैं। लाख-लाख लोग इसे देखते आ रहे हैं। उनके लिए कोई महत्त्व की बात नहीं। किन्तु बुद्धिमान लागों ने इससे ब्रह्माण्ड में व्यापक कारण और कार्य का नियम तलाश किया। सौर मण्डल के रहस्य को जाना। और सबसे बड़ी विचित्र बात तो यह हुई कि सूर्य चन्द्र और ग्रह नक्षत्रों की गति से पृथ्वी की गति को समझा।

दिन-रात का चक्र, ऋतुओं का परिवर्तन, चन्द्र तारों का स्थान परिवर्तन, वर्षा, भूकम्प, जन्म, मृत्यु इत्यादि साधारण घटनाएँ हैं। देश-विदेश के दायरे में देखने से इनमें कोई विशेष बात नहीं दिखती। जब सौर मण्डल या भूगोल की दृष्टि से देखा जाता है तो प्रत्येक घटना ब्रह्माण्ड के रहस्य को खोलती है। जीव जगत के जन्म की कहानी बताती है। विज्ञान का विकास प्रकृति की घटनाओं को देखने के कारण ही हुआ है।

हमारा देश २२०० वर्षों से देखना भूल गया है। चांद रूपी दिव्य नेत्र होते हुए भी यह नहीं देख सका। ब्रह्माण्डीय घटनाओं को देख कर हमारे पंडितों ने देवतावाद को जन्म दिया। देवतावाद से तन्त्र-मन्त्र, जादू चमत्कार और भाग्यवाद जैसी भीषण विकृतियाँ फैलीं। वैज्ञानिक उपलब्धि के स्थान पर अज्ञान की प्राप्ति हुई। ब्रह्माण्ड दर्शन तो दूर की बात है। यह देश उन घटनाओं को भी नहीं समझ सका जिनसे इतिहास की दिशा मुड़ी। हजार वर्षों तक विदेशी शासन के जूये में दबे रहने के बाद भी आज तक इतना भी नहीं जाना जा सका है कि पारस्परिक फूट ही पतन का कारण है। इतिहास का साधारण सत्य भी जिन्हें न दिखे उनका यह मानना कि वही संसार में सबसे श्रेष्ठ है और तत्वविद् है पागलपन की बात है। आँख और अक्ल दोनों से ही अगर अन्धे होते तो कुछ बुरा नहीं होता। अधिक से अधिक यही होता कि कुछ न देख पाते। किन्तु यहां तो स्थिति यह रही कि आंख कमजोर और बुद्धि भ्रष्ट। अतः घटनाएँ सदा उल्टे ढंग से देखी गयीं। अस्तु भ्रमपूर्ण मान्यता और अन्धविश्वास जीवन का आधार बन गये। वेद में स्थान-स्थान पर प्रार्थना की गई है कि हम सौ वर्ष तक देखने वाले, भद्र को देखने वाले बनें।

'पश्येम शरदः शतम् भद्रं पश्येम्'

उपनिषदों में एक बड़ी गम्भीर बात मैंने देखी जब कभी कोई जिज्ञासु ज्ञान के लिए ऋषियों के पास जाता था तब ऋषि उसे गो-संवर्धन सेवा के लिये वन में भेज देते थे। 'सौ गऊ ले जाओ जब एक हजार हो तब आना।' एक ऐसे ही उदाहरण में जिज्ञासु गऊ लेकर गया, जब लौट कर आया तो ऋषि बोले 'तुम्हारा मुख ब्रह्म तेज से मण्डित है। तुम्हें किसने उपदेश किया है?' ऋषि के पूछने पर जिज्ञासु बोला-'बैल और अग्नि ने उसे उपदेश किया है।' गो-संवर्धन का और वन में वास करने का यही रहस्य था। जिज्ञासु प्रकृति और घटनाओं को नये सिरे से देखे और चिन्तन करें। इसलिये ऋषि उन्हें गो सेवा के लिये भेजते थे। आत्मज्ञ होने के लिए प्रकृति, परिवेश और घटनाओं को देखना आना चाहिये। उपनिषद् कहता है-

'आत्मा वा अरे द्रष्टव्यो'

अतः आत्म अनुभूति के लिये देखना सीखो। देखने से ही आत्मबोध होता है। यह अनुभव आत्मनिष्ठ करने वाला है। आत्मा का गौरव जब प्रकट होता है तो संसार के सारे जड़ पदार्थ प्रभाहीन और बौने हो जाते हैं। इस सम्बन्ध में एक मार्मिक घटना है- वर्मा और गुप्त दो मित्र थे। दोनों एक ही फैक्टरी में सहायक इन्जीनियर थे। एक ही सरकारी बंगले में रहते थे। साथ खाना साथ सोना। एक

प्राण दो तन, ऐसी थी उनकी मित्रता। दोनों अविवाहित थे। उनकी मित्रता कारखाने में चर्चा का विषय थी। समय पाकर गुप्त का विवाह हो गया। वह पत्नी को ले आया। पत्नी के आगमन ने गुप्त के दिनचर्या और रहन-सहन को ही बदल दिया। कोठी के हाल का किवाड़ जो खुला ही रहता था अब बन्द हो गया। अब वर्मा अकेला अपने हिस्से में रहता था। दोने अब भी मित्र थे किन्तु उतना समय साथ नहीं रह पाते थे जैसा पहले रहते थे। एक दूरी आती चली गयी। मिलना भी कभी-कभी होन लगा। एक रात गुप्त की पत्नी के उदर में पीड़ा उठी। शूल का वेग भयंकर था। राते के दो बजे थे। वर्मा डाक्टर को लाया। देखते देखते किसी नस का हेमरेज हो जाने से गुप्त की पत्नी मर गयी। दोनों मित्र जो कुछ कर सकते थे उन्होंने किया। 'अब क्या करें?' मित्र के पूछने पर वर्मा ने कहा-'चार घंटे रात काट ली जाये। प्रातः अन्त्येष्टि की तैयारी करेंगे।' बात थी भी ठीक। रात में क्या किया जा सकता था। वर्मा अपने हिस्से में चलने को उद्यत हुआ तो गुप्त ने कहा-'मित्र मैं अकेला यहाँ नहीं रह सकता। ताला लगा देते हैं। मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा।' 'अरे यह अकेले यहाँ कैसे रहेगी?' वर्मा ने पलंग पर पड़ी मृत देह की ओर इशारा करते हुये कहा। 'तो तुम भी यहीं बैठो न।' गुप्ता ने कहा। दोनों ने मृतक वाले कमरे में ताला लगाया और दूसरे कमरे में चले गये। वर्मा ने कहा-'मित्र एक बात बताओ नित्य भी तो तुम इनके साथ रहते थे। आज रहने में डर की क्या बात हो गई!' दुखी गुप्ता का मन क्या उत्तर देता किन्तु वर्मा का मन इसी उधेड़ बुन में लगा रहा कि अखिर भय की क्या बात है! शरीर वही है जिसके साथ आज तक सोता रहा है। अब उसमें भय की क्या चीज बन गई है जो एक रात के दो घंटे भी पति को उस शरीर के साथ नहीं रहने देती? विचार मन्थन होता रहा। मथने से नवनीत निकलता है। वर्मा के विचार मन्थन ने सत्य का नवनीत निकाला।

ओह यह शरीर चाहे पति का हो या पत्नी का प्रेम की वस्तु नहीं है। शरीर चाहे किसी का भी क्यों न हो प्रेमपात्र नहीं है। यह तभी तक सुन्दर और प्रिय था जब तक इसमें आत्मा का वास था। आत्मा के निकल जाने पर यह कैसा घृणित और निरर्थक हो जाता है? तब क्या शरीर से प्रेम नहीं किया जाना चाहिये? क्या लोग पत्नी और पुत्र से जो सम्बन्ध रखते हैं वह सब मूल्यहीन हैं? वर्मा की इन शंकाओं का समाधान उपनिषद् करता है। याज्ञवल्क्य लिखते हैं-

न वा अरे पत्युः कामाय पतिः प्रियो- भवत्यात्मनस्तु कामाय पतिः प्रियो भवति। न वा अरे जायायै कामाय जाया प्रिया भवति आत्मनस्तु कामाय जाया प्रिया भवति।।

अर्थात् 'पति की कामना के लिये पत्नी पति को प्रेम नहीं करती और न पत्नी का कामना के लिये पत्नी प्रिय होती है। अपितु आत्मा के लिये पति पत्नी को पत्नी पति को प्रेम करते हैं।'

(क्रमशः)

thearyasamaj.org

काव्यायन

१३२ बच्चे शहीद

❑डॉ.रूपचन्द्र 'दीपक'

पेशावर में मौत नचा के, कलियाँ रौंदी नफ़रत ने।
महाद्वीप को नरक बना रक्खा इन्सानी फ़ितरत ने।।

पाकिस्तान तेरे ग़म में भारत भी है ग़मगीन हुआ।
दुःख सहकर पाए विवेक तू, ईश्वर से कर रहा दुआ।।

एक सौ बत्तिस बच्चे भारत में मरते तो तू हँसता।
वहाँ मरे तो तेरे संग, मेरा भी हृदय फटा पड़ता।।

आम आम को ही जनता है, कीकर जनता कीकर को।
हाथ कोयले से रंग लेता करे जो काला दीगर को।।

जहाँ खड़ा तू वहाँ कभी था स्वर्ग मगर तू भूल रहा।
खंजर अरु तोपों के बिच ही, नादानी में झूल रहा।।

चले गये जो, आ न सकेंगे, नम आँखों से बोल विदा।
दहशतगर्दी को भी प्यारे, साथ-साथ कही तू अलविदा।।

–314, आचार्यकुलम्, पतजंलि योगपीठ फेज–2, हरिद्वार–249 405

तिरंगा

❑डॉ. कैलाश निगम

केसरिया रंग यह क्रान्ति का करे निनाद
श्वेत रंग शान्ति का प्रतीक भासमान है।
हर रंग जीवन सृजन का है जयघोष
चक्र ये नहीं है दीपता-सा दिनमान है।
दण्ड इसका हमारी एकता का मानदण्ड
सूत्र है कि स्नेह का अनूठा उपमान है।
राष्ट्र का गुमान भारतीयता की आनबान
तीन रंग वाला यह अपना निशान है।।

–4/522, विवेक खण्ड,, गोमतीनगर, लखनऊ

भारतीय सुषमा

❑रामकुमार गुप्त

परमेश्वर ने निज कौशल से रची,
भारत भूमि विशिष्ट मनोहर।
दिनमान सुभास्वर रश्मियों से,
छविमान कलाधर शोभित अम्बर।
वन, बाग, तड़ाग कहीं सलिला-
पुलिनों पर कूजित है खग का स्वर।
बहुरंगी छटा सजी श्यामल शस्य,
अँकोरे जिसे प्रिय है रत्नाकर।।

–निकट मगलादेवी मंदिर, गोला गोकर्णनाथ, खीरी–262802

तुमसे मिलने को

❑घनानन्द पाण्डेय 'मेघ'

सौ-सौ बार जनम ले लूँगा, तुमसे मिलने को।
कली-कली ज्यों मचला करती, फिर-फिर खिलने को।।

बारिश रिमझिम होने को हो, होते-होते फिर रुक जाये।
पेड़ लदे हों खूब फलों से, डाली-डाली झुक-झुक जाये।।

उछल-उछल, झर-झर झरते हैं, दूर खड़े नग-नग के झरने।
इधर यौवनायें बल खतीं, हंसती जातीं गागर भरने।।

मंद पवन के शीतल झोंके, तन-मन को छू-छू चल देते।
कभी न भूले जाने वाले, मन मोहक पल दो पल देते।।

वासन्ती ऋतु से घुल-मिलकर, बगिया मादकता महकाये।
फूल-फूल कलियों में फिर से, यवनाओं सा यौवन छाये।।

–खुर्रम नगर, रिंग रोड, लखनऊ

सदहदों पर स्वदेश की...

❑डॉ.मिर्ज़ा हसन नासिर

दश्त में ढलते बोस्ताँ देखे,
हमने खुदगर्ज बाग़बाँ देखे।

हमने भी यार् चार धामों में,
बेनिशानों के कुछ निशाँ देखे।

हमने छोटी-सी इस धरा पर ही,
घूमते-फिरते आसमाँ देखे।

नफ़रतों के दहकते शोलों में,
प्यार के जलते आशयाँ देखे।

सरहदों पर स्वदेश की खातिर,
जाँ गँवाते हुए जवाँ देखे।

हमने कुटियों में नित अमा देखी,
चमचमाते महल-मकाँ देखे।

कितने ही कारवाँ बने 'नासिर',
कितने गुम होते कारवाँ देखे।

–जी–02 लोरपुर रेज़ीडेन्सी, न्यू हैदराबाद, लखनऊ

सम्भावनाओं का पुजारी

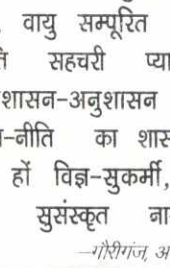

❑गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

मैं सुखद सम्भावनाओं का पुजारी!
दो नयन की प्रज्वलित लघु दीपमाला,
संस्कारों की खुली है पाठशाला।
बाँचती उच्छ्वास है, स्नेहिल ऋचाएँ,
हृदय स्थल में सुपावन यज्ञशाला।
नव सृजन की आरती मैंने उतारी।
रूप का लोलुप, बना योगी नहीं हूँ,
साधना का उच्च प्रतियोगी नहीं हूँ।
गंध, रस, निर्लिप्त रहता हूँ भ्रमर सा,
पाश में हूँ, किन्तु अभियोगी नहीं हूँ।
ज्योत्सना के द्वार का मैं हूँ भिखारी।
स्नेह वत्सल की दया से पूर्ण होगी कामना,
निर्झर तर पर न होगी प्यास की अवमानना।
ग्रन्थ जीवन का प्रकाशित शीघ्र होगा,
शेष है लिखनी अभी प्रस्तावना।
मलयजी संचेतना से नियति हारी।
मैं सुखद सम्भावनाओं का पुजारी!!

–117, आदिलनगर, विकासनगर, लखनऊ

नववर्ष शुभकामना

❑सविता वार्णी

सरस सुवासित सुमनों से
सज्जित जीवन फुलवारी हो।
वर्ष धूप, वायु सम्पूरित
प्रकृति सहचरी प्यारी हो।
स्वच्छ प्रशासन-अनुशासन से
न्याय-नीति का शासन हो।
आर्यवीर हों विज्ञ-सुकर्मी,
श्रमी सुसंस्कृत नारी हो।।

–गौरीगंज, अमेठी (उ.प्र.)

कालजयी काव्य

नव वसन्त

❑श्रीश्यामनारायण पाण्डेय

नव वसन्त के कुसुम-शरों से
मार भगाया गया शिशिर।
अर्धचन्द्र देकर जग के
उस पार लगाया गया शिशिर।।

छिपा काल की गोदी में,
जब हारा शिशिर वसन्त शक्त से।
दोनों ऋतुओं के संगर से
तरु भी तर हो गये रक्त से।।

इसीलिए जो प्लव निकले,
शाणित-स्नात लाल ही निकले।
था तरु-तरु की डाल-डाल से
बन कर ज्वलित ज्वाल ही निकले।।

जान पराजय वीर शिशिर के
गाँव फूँकना रंच न भूले।
वही लगी है आग भयंकर,
ये पलाश के फूल न फूले।।

लाल-लाल आँखें कर कोयल,
बौरे आमों की डाली पर,
मधु की विजय सुनाती फिरती,
मस्त विजय थी सुरवाली पर।।

यशोगान करते अलि गुन-गुन,
झूल टहनियों के झूलों पर।
कानों में कुछ कह जाती थीं,
बैठ तितलियाँ फूलों पर।।

मन्द-मन्द मलयानिल वन-वन,
यश-सौरभ लेकर बहता था।
सबसे मिलकर नव वसन्त के
गौरव की गाथा कहता था।।

केवल पिक के ही न, विजय पर
सभी खगों के गान सुरीले।
नव-उपवन भर देते गा-गा,
डाल-डाल पर गयन गीले।।

('जौहर' महाकाव्य से साभार)

प्यारा अपना देश

❑दयानन्द जड़िया 'अबोध'

प्यारा अपना देश, सौम्य सुरपुर से न्यारा।
न्यारा तुंग हिमाद्रि, मंजु गंगा की धारा।।
धारा ध्वज निज धर्म, ज्ञान जग में विस्तारा।
तारा जग-नभ मध्य, हमारा भारत प्यारा।।

जागो राष्ट्र हितार्थ, द्वेष ईर्ष्या मद त्यागो।
त्यागो अब आलस्य, अनैतिकता से भागो।।
भागो तज दुष्कर्म, दीन सेवा व्रत माँगो।
माँगो प्रभु से भक्ति, मोह निद्रा से जागो।।

गाओ राष्ट्र-सुगान, शत्रु दल पर छा जाओ।
छा जाओ ज्यों मेघ, प्रगति की कृषि उपजाओ।
उपजाओ सद्भाव, द्वेष अलगाव भगाओ।
गाओ उन्नति गीत, विजय पा हर्षित गाओ।।

लहराओ ध्वज राष्ट्र, गान जन गण मन गाओ।
गाओ कीर्ति अतीत, शत्रुओं पर छा जाओ।
जाओ घृणा न पास, स्नेह-रस चख सुख पाओ।
पाओ विजय विभूति, पताका यश लहराओ।।

–वन्दा–मण्डप, 370/27, हाता नूरबेग, सआदतगंज, लखनऊ

बसन्त जब आता है

❑रम्मन लखनवी

भाँति-भाँति रंग के दुकूल धरा धरती है,
कोकिल मुदित तान अपनी सुनाता है।
होकर अधीर जाते झूम हैं सुमन दल,
घूम-घूम जब अलि प्रेम गान गाता है।
गाज सी वियोगियों के उर पे गिराता और,
योगियों के अन्तर में कामना जगाता है।
अनुराग का ही लहराता पट चारों ओर,
धरती के आँगन बसन्त जब आता है।।

कोकिल के स्वर ने जगाया काम कामना को,
मादक तरंग ले समीर लहराया है।
ठौर-ठौर देखिये समस्त पादपों ने आज,
डालियों को सरस प्रसून से सजाया है।
कंठ से लगाया कन्त ने है कामिनी को आज,
कामिनी ने भुजमाल कन्त को पिन्हाया है।
प्रेम रस प्यार का प्रवाह चारों ओर यहाँ,
सुखद बसन्त हर अन्तर को भाया है।।

–रमन लाल अग्रवाल, 7, नजीराबाद, लखनऊ

thearyasamaj.org

राजस्थान-समाचार

उल्लेखनीय समाजसेवा के लिए अर्जुनदेव चड्ढा सम्मानित

कोटा, ८ दिसम्बर। कोटा क्षेत्र में समर्पित भाव से व निष्ठापूर्वक किए जा रहे विभिन्न समाज सेवा कार्यों के लिए आर्य समाज के जिला प्रधान एवं पंजाबी सेवा समिति के अध्यक्ष अर्जुनदेव चड्ढा को एक भव्य कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पुलिस महानिरीक्षक डॉ.रवि प्रकाश महरड़ा द्वारा शॉल ओढ़ाकर, सम्मान पत्र व स्मृतिचिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया।

कोटा स्थित दादा नारायण दास मदनानी सेवा संस्थान के सेवा सप्ताह के समापन पर आयोजित समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि ने कहा कि मानव जीवन में सेवा से बड़ी संतुष्टि मिलती है। मनुष्य की इसी प्रवृत्ति के कारण जीवन आगे बढ़ता और सार्थक होता है। संस्थान के अध्यक्ष डा.टी.सी.मेहता ने कहा कि इस सर्वश्रेष्ठ कार्य को करने में माननीय अर्जुनदेव चड्ढा कोटा शहर में अग्रणी रहते हुए समाज सेवा के कार्य करते आ रहे हैं। इसके लिए संस्थान आपकी इस निष्ठा के आगे नतमस्तक होकर सम्मान एवं अभिनन्दन करता है। संस्थान के सचिव किशोर मदनानी ने सभी अतिथियों एवं आगन्तुकों का आभार व्यक्त किया।

आदिवासी मजदूरों को बांटे गर्म कपड़े

कोटा, २० दिसम्बर। जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा की ओर से आर्य समाज विज्ञान नगर कोटा में वस्त्र वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें माम भील व उनके नन्हें मुन्ने बच्चों को गर्म कपड़े वितरित किये गये। इस अवसर पर आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि जब कड़कड़ती सर्दी में आदिवासी दम्पत्ति पव मजदूरी करते हैं तव उनके यह नन्हें मुन्ने बच्चे सर्दी से परेशान रहते हैं। आर्य समाज द्वारा जरूरतमंद पुरुषों को पैंट, शर्ट, गर्म कपड़े व बच्चों को गर्म वसत व टोपे पहना गए। कपड़े पाकर पुरुष व बच्चे बहुत खुश हुए। आर्य समाज द्वारा अन्य सेवा कार्य भी किये जा रहे हैं। कार्यक्रम में स्थानीय पार्षद श्रीमती रेखा लखेरा ने वस्त्र वितरित करते हुए काह कि आर्य समाज का यह जनसेवा कार्य प्रशंसनीय है। श्रीमती लखेरा ने कहा कि इन मजदूर भाइयों की सहायता करके मुझे हर्ष हो रहा है। इस अवसर पर आर्य समाज विज्ञान नगर के प्रधान जे.एस.दुबे, कोषाध्यक्ष कौशल रस्तोगी, डॉ.के.एल.दिवाकर, पंजाबी जनसेवा समिति के महामंत्री दर्शन पिपलानी, कुणाल जुल्का, सुरेश लखेरा, कुंजबिहारी खण्डेलवाल, कौशल मघलानी आदि उपस्थित थे। *(अरविन्द पाण्डेय)*

गुजरात-समाचार

श्रीमती हर्ष मुंजाल दिवंगत

हीरो परिवार के प्रमुख श्री योगेश मुंजाल की धर्मपत्नी एवं म.सत्यानन्द मुंजाल की पुत्रवधू श्रीमती हर्ष मुंजाल का ०३.०६.१४ को निधन हो गया। आप अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़कर गई हैं और सारे दायित्वों से निवृत हो चुकी थीं। यज्ञ से आपका विशेष लगाव था। आज के भौतिक वातावरण में महिलायें जहाँ किटी पार्टी आदि परम्पराओं में संलग्न हैं, वहाँ श्रीमती हर्ष मुंजाल जी ने महिलाओं का एक छोटा सा संगठन बनाया जिसकी ६० महिलायें सदस्य हैं। इस संगठन की एक महिला के यहाँ प्रति मास क्रमानुसार यज्ञ करवाता जाता है और श्रीमती हर्ष मुंजाल स्वयं यज्ञ करवाती थीं। निःसन्देह यह अतिशयोक्ति नहीं होगी कि उन्होंने अपने पुत्र-पुत्रियों को भी इसी प्रकार के संस्कार दिये और वे भी यज्ञ से जुड़े हुए हैं। मुंजाल परिवार के प्रत्येक सदस्य के घर पर यज्ञशाला है और वहाँ प्रतिदिन यज्ञ होता है। 'आर्य लोक वार्ता' की हार्दिक श्रद्धाँजलि!

मुंबई-समाचार

आर्य वीरांगना चरित्र निर्माण शिविर

आर्य प्रतिनिधि सभा मुंबई के तत्वावधान में आर्य वीर दल मुम्बई द्वारा आर्य वीरांगना चरित्र निर्माण शिविर आर्य समाज सांताक्रुज के प्रांगण में आयोजित किया गया। शिविर का शुभारम्भ श्रीमती अरुणा परेश पटेल, श्रीमती रजनी रवि सिंग एवं श्री लालचंद आर्य उपप्रधान आर्यसमाज सांताक्रुज के करकमलों द्वारा ध्वजारोहण के साथ हुआ। शिविर में पाठ्यक्रम का संचालन द्रोणस्थली तपोवन देहरादून से पधारी सुव्रता आर्या, श्रीमती वीणा चतुर्वेदी पाणिनी कन्या गुरुकुल वाराणसी एवं अंजलि गोस्वामी एवं सौरभ सिंह मुंबई ने किया।

आचार्य नरेन्द्र शास्त्री का सम्मान

वैदिक प्रतिष्ठान मुम्बई के प्रथम वार्षिक सम्मेलन १६ नवम्बर २०१४ को कच्छी कडवा पाटीदार समाज वाडी बोरिवली (पू.) में आयोजित किया गया, जिसमें यज्ञ आचार्य नामदेव आर्य के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ तथा आचार्य शिवदत्त पाण्डेय के प्रवचन तथा वीरेन्द्र मिश्रा एवं योगेश आर्य के भजन हुए। इस अवसर पर कर्मठ कार्यकर्ता आचार्य नरेन्द्र शास्त्री को सम्मानित किया गया।

सीतापुर-समाचार

संक्षिप्त समाचार

दि. २५.१२.१४ का पीरपुर महोली के बगला बाग में विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी ११ कुण्डीय देवयज्ञ का आयोजन हुआ। इस अवसर पर वैदिक भजन व उपदेश हुए तथा २६ लोगों ने यज्ञोपवीत धारण किया। पूर्व में सम्पन्न यज्ञ का आचार्यत्व रामेन्द्र कुमार आर्य ने किया। विशाल ऋषि लंगर के साथ सम्पन्न हुए इस कार्यक्रम में एक छोटे मेले का भी आयोजन किया गया।

दि. २६.११.१४ को हरिकिशुन पुर (एलिया) के राम हेत की विधवा पुत्री सियावती व पुवायां शाहजहांपुर के अनूप पटेल (विधुर) का पुनर्विवाह छोटी छावनी नैमिषारण्य में वैदिक रीति से श्री नेतराम आर्य पुरोहित द्वारा सम्पन्न कराया गया। इस अवसर पर वर के पिता ने आर्य समाज चमखर सीतापुर को ११००रुपये का दान दिया। नव दम्पति को प्यारेलाल पटेल, रावेन्द्र पटेल उदयपुर रामदास, जयदेवी आदि सदस्यों ने आशीर्वाद दिया। *(रामेन्द्र आर्य)*

सप्त प्रतिभा सम्मान

हिन्दी साहित्य परिषद् सीतापुर के तत्वावधान में परिवर्तन इण्डिया के संचालक श्री श्याम किशोर 'बेचैन' द्वारा गोपी रानी मेहरे इंटर कालेज खीरी के सरस्वती सभागार में सात रचनाकारों को पर्यावरण चेतना ट्राफी प्रदान की गई। कार्यक्रम में मुजीब सीतापुरी, रामदास वैश्य, इं.गोपाल सागर, वैद्य भालेन्दु त्रिपाठी, मीनाक्षी मेहरे, निर्मला पाल, राजकुमार इत्यादि ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन श्री अवधेश शुक्ल ने किया।

आवश्यक सूचना

सीतापुर जनपद में 'आर्य लोक वार्ता' के प्रवार-प्रसार को गति देने तथा सहयोग राशि संकलन करने हेतु श्री नेतराम आर्य, आर्य पुरोहित की नियुक्ति की जाती है। श्री नेतराम आर्य हमारे वरिष्ठ आर्यनेता श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी' के निर्देशन में कार्य करेंगे। समस्त 'आर्य लोक वार्ता' के सदस्यगण अपनी सहयोग राशि श्री नेत राम जी को देने का कष्ट करें। प्राप्त सहयोग की सूची आर्य लोक वार्ता में प्रकाशित होगी तथा रसीद प्रेषित की जायगी। *(सम्पादक)*

सण्डीला-समाचार

मकर संक्रान्ति पर्व

आर्य समाज सण्डीला के तत्वावधान में मकर संक्रान्ति का पर्व विधि विधान के साथ मनाया जाता है। यज्ञ, भजन, उपदेश के साथ ही खिचड़ी-प्रसाद वितरण भी किया जाता है। वर्ष २०१५ के मकर संक्रान्ति के मनाने की भी विशेष व्यवस्था की गई। आर्य समाज संडीला द्वारा मकर संक्रान्ति पर्व उत्साहपूर्वक मनाया गया। यज्ञ हवन, प्रवचन, भजन के अलावा खिचड़ी भोज प्रसाद वितरण की समुचित व्यवस्था की गई। यह भी तय हुआ कि ऐसे स्थानों पर यज्ञ का आयोजन किया जाय, जहाँ अभी तक कभी नहीं हुआ।

डाक-व्यवस्था सुधरी

दिसम्बर के अंक में 'संडीला में डाक वितरण अव्यवस्थ' से सम्बन्धित समाचार के प्रकाशन के बाद वहां डाक व्यवस्था में सुधार का समाचार मिला है। डॉ.सत्यप्रकाश जी ने यह सूचना दी है । आशा है संडीला के अन्य स्वाध्याय प्रेमियों को भी आर्य लोक वार्ता की प्रतियां मिल गई होंगी। न मिलने पर सूचना अवश्य दें।

आर्य्य लोक वार्ता

ऋत्विक्-मंडल

(प्रतिवर्ष १२०० रु. या अधिक सहयोगकर्त्ता)

माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास, ज्वालापुर, **हरिद्वार**; विद्यासागर फाउण्डेशन, **मेरठ**; अम्बिका प्रसाद एडवोकेट, **लखनऊ**; आनन्द कुमार आर्य, **कोलकाता**; पाल प्रवीण, अलीगंज, **लखनऊ**; श्रीमती कमलेश पाल, अलीगंज, **लखनऊ**; श्रीमती प्रमोद कुमारी, अलीगंज, **लखनऊ**; जगदीश खत्री, हिन्द नगर, **लखनऊ**; ओजोमित्र शास्त्री, महावीरगंज, **लखनऊ**; अभिषेक, अलीगंज, **लखनऊ**; श्रीमती गीतांजलि, अलीगंज, **लखनऊ**; श्रीमती मिनी स्वरूप, **नई दिल्ली**; कर्नल पाल प्रमोद, **मेरठ**; अरविन्द कुमार, आर्कीटेक्ट, गोमती नगर, **लखनऊ**; श्रीमती शालिनी कुमार, आर्कीटेक्ट, गोमती नगर, **लखनऊ**; प्रधानाचार्या, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कालेज, टाण्डा, **अम्बेडकरनगर**; श्रीमती मधुर भंडारी, **नई दिल्ली**; रमेश चन्द्र त्यागी, गोमती नगर, **लखनऊ**; प्रो.आनन्द वैद्य, राजाजीपुरम, **लखनऊ**; पीयूष गुप्त, **सिंगापुर**; श्री रमनलाल अग्रवाल, नजीराबाद, **लखनऊ**; श्रीमती प्रकाश अग्रवाल, **बरेली**; कृष्ण स्वरूप चौधरी, गोमती नगर, **लखनऊ**; ले.कर्नल चन्द्रमोहन गुप्त, लखनऊ; डॉ.सी.वी.पाण्डेय, सर्वोदय नगर, **लखनऊ**; अखिल मित्र शास्त्री, महावीरगंज, **लखनऊ**; श्रीमती प्रमिला पाल, मवाना, **मेरठ**; दीपक कुमार दर्शन, अमीनाबाद **लखनऊ**; बी.एन.टण्डन, **बहराइच**; अनूप टण्डन, **मेरठ**; श्रीमती कुसुम वर्मा, इन्दिरा नगर, **लखनऊ**; वेद प्रकाश बटुक, **मेरठ**; सतपाल महाजन, **गुड़गाँव**; प्रणव श्रीवास्तव, **अहमदाबाद**; नरेन्द्र भूषण, जानकीपुरम, **लखनऊ**; आर. सी. यादव, सत्या क्लीनिक, इन्दिरा नगर, **लखनऊ**; चौधरी रणवीर सिंह, प्रधान, आर्य समाज, **सीतापुर**; श्रीमती मंजू रेलन, गोमती नगर, **लखनऊ**; श्रीमती मनीषा त्रिवेदी, **दुबई**; कौशल किशोर श्रीवास्तव, नया तिलक नगर, **लखनऊ**; अर्जुनदेव चड्ढा, कोटा, **राजस्थान**; नरसिंह पाल एडवोकेट, राजीव नगर, **लखनऊ**; नरदेव आर्य, एल.डी.ए. कालोनी, **लखनऊ**; श्रीमती मीना दीक्षित, गोमती नगर, **लखनऊ**; श्रीमती इन्द्रा शर्मा, डालीबाग,**लखनऊ**; इं.जे.पी.अग्रवाल, गायत्रीलोक, कनखल, **हरिद्वार**; श्रीमती प्रियदर्शिनी मित्तल, **बंगलौर**; आर.के.शर्मा, जानकीपुरम, **लखनऊ**; पं.रामलाल आर्य, **अमेरिका**; सतीश निझावन, आदर्शनगर, **लखनऊ**; बाँके बिहारी 'हर्ष', अवध मोटर वर्क्स, **फैजाबाद**; राम मनोहर वैश्य, बेनीगंज, **हरदोई**; श्रीमती रमा आर्य 'रमा', नेवाजगंज, **लखनऊ**; श्रीमती मालती त्यागी, गोमती नगर, **लखनऊ**; देवेन्द्र नाथ चौधरी, हसनगंज पार, **लखनऊ**; मदन मोहन जोशी, आदर्श नगर, **लखनऊ**।

इलाहाबाद-समाचार

श्रद्धांजलि

कुल भास्कर आश्रम डिग्री कॉलेज इलाहाबाद के उपप्राचार्य, कुशल शिक्षक, समाजसेवी एवं ज्योतिष विज्ञान के ज्ञाता ७२वर्षीय डॉ.रमाकान्त का गत दिनों निधन हो गया। आप अपने पीछे धर्मपत्नी श्रीमती लतिका श्रीवास्तव, तीन पुत्रियों तथा दो पुत्रों का परिवार छोड़ गये हैं। नेहरू इन्क्लेव, गोमती नगर में आपकी पुत्री श्रीमती सारिका माथुर (प्रवक्ता डिग्री कॉलेज) तथा दामाद श्री संजय माथुर (प्रख्यात मीडिया विशेषज्ञ) निवास करते हैं। श्री रविकान्त, मुख्य संवाददाता स्टार न्यूज, दिल्ली तथा श्री श्रीकान्त व्यापारिक संस्थान चलाते हैं। अनुष्का और शिताषी आपकी पुत्रियाँ हैं तथा मंदाकिनी एवं शिल्पी (सहारा न्यूज) आपकी पुत्रवधुएँ हैं। आर्य लोक वार्ता को स्व.डॉ.रमाकान्त के परिवार का पूर्ण सहयोग प्राप्त रहा है। हार्दिक श्रद्धांजलि!

मीरजापुर-समाचार

आर्य समाज बगहा का 62वाँ वार्षिकोत्सव

मीरजापुर जनपद की अत्यंत प्रतिष्ठित एवं क्रियाशील आर्य समाज बगहा का ६२वाँ वार्षिकोत्सव १३ से १५ फरवरी २०१५ को समारोह पूर्वक मनाया जायगा। उत्सव में आचार्य विश्वव्रत शास्त्री आर्ष गुरुकुल, जानकीपुरम, लखनऊ के आचार्यत्व में यजुर्वेद पारायण यज्ञ उत्सव का प्रमुख आकर्षण होगा। उत्सव को आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.के मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती के सदुपदेश एवं सुश्री धर्मरक्षिता जी (बिहार) के भजनोपदेश होंगे। उत्सव आर्य समाज के पूर्व मंत्री एवं आर्य वीर दल के संचालक ख्यातिलब्ध आर्यनेता श्री बेचन सिंह आर्य, वरिष्ठ उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ की देखरेख एवं निर्देशन में सम्पन्न होगा।

लखनऊ-समाचार

छन्दकार दिवस

गोमती प्रसाद पाण्डेय 'कुमुदेश' की जयन्ती ३६वें छन्दकार दिवस के रूप में उनके सुपुत्र छन्द शिल्पी अशोक कुमार पाण्डेय 'अशोक' के जानकीपुरम आवास पर मनाई गई जिसके अध्यख डॉ.गंगारत्न पाण्डेय, मुख्य अतिथि नेत्रपाल सिंह तथा विशिष्ट अतिथि डॉ.मृदुल शर्मा थे। नन्द किशोर शर्मा की वाणी वन्दना के पश्चात अतिथियों सहित महेश पाण्डेय तथा अशोक पाण्डेय ने कुमुदेश के साहित्यिक अवदान पर प्रकाश डाला। तदुपरान्त आयोजित काव्यगोष्ठी में चेतराम अज्ञानी, प्रमोद द्विवेदी, गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र', गोबर गणेश, ऋतुराज पाण्डेय, योगेश सिंह, श्रीमती रमा आर्य 'रमा', शिवनाथ सिंह, आवारा नवीन, विनय वाजपेयी, डा.मृदुल शर्मा, राजेन्द्र शुक्ल 'राज' ने काव्य पाठ किया। संचालन अवधेश चन्द्र गुप्त 'नमन' ने किया। *(विनम्र)*

वैवाहिक स्वर्ण जयन्ती

अलीगंज वैदिक सत्संग के विशिष्ट सदस्य श्री सीताराम नागपाल की ५०वीं वैवाहिक जयन्ती एम.एस.११५, सेक्टर-डी, अलीगंज में वैदिक रीति से मनाई गई। यज्ञ एवं समारोह में नागपाल दम्पत्ति के सम्बन्धी, उनके बच्चे, दामाद व मित्रगण सम्मिलित हुए। सभी ने दोनों को बधाई व शुभकामनाएँ अर्पित कीं। श्री सेवकराम आर्य ने यज्ञ सम्पन्न कराया। सुमधुर भजनों का गायन हुआ। शांतिपाठ एवं स्वल्पाहार के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। *(पालप्रवीण)*

thearyasamaj.org

दयानन्द का दिव्य संदेश भूले धरा क्या कहेगी, गगन क्या कहेगा?

ऐसे समय में जब छद्मवेश धारण करने वाले साधु संन्यासी आर्य समाज की सम्पतियों पर कुंडली मारकर बैठ गये हैं और आर्य समाज का वर्तमान और भविष्य धूमिल बना रहे हैं; देश और जाति के सौभाग्य से धर्मेश आर्य जैसे नवयुवक 'विचार टेलीविजन' को अपने बल पर विकसित करके एक नया गौरव पूर्ण अध्याय आर्य समाज के इतिहास में जोड़ रहे हैं। इसे महर्षि दयानन्द और वैदिक विचारधारा का दमखम ही मानना चाहिए। योगगुरु स्वामी रामदेव जी महाराज का वरदहस्त इन्हें सहज रूप में प्राप्त है।

'आस्था भजन' चैनल पर सायं ७ बजे से ८.३० बजे तक, 'आस्था' चैनल पर रात्रि ६.३० से १० बजे तक विद्वानों के प्रवचन, भजन, वेदोपदेश तथा फिल्मों के प्रसारण के कार्यक्रम चल रहे हैं। यह कार्यक्रम बड़े ही योग्यता के साथ तैयार किये गये हैं। इनको नित्यप्रति देखकर आप अपना तथा अपने परिवार का ज्ञानवर्द्धन एवं मनोरंजन साथ साथ कर सकते हैं। इसमें प्रसिद्ध अभिनेत्री सुधा चन्द्रन तथा मुकेश खन्ना जैसे कलाकारों का सहयोग प्राप्त है। सम्पर्क हेतु पत इस प्रकार है- धर्मेश आर्य, कार्यकारी निदेशक, विचार टेलीविजन नेटवर्क लिमिटेड, प्रथम तल, बिंदल हाउस, कुंभारिया, सूरत-बड़ोदरा मार्ग, सूरत (गुजरात)।

लखनऊ-समाचार

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस २३ दिसम्बर २०१४ को डीएवी इंटर कालेज के सभागार में समारोहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर लखनऊ जनपद की समस्त आर्य समाजों ने आयोजन में बढ़चढ़ कर भाग लिया। जिला आर्य सभा के प्रधान श्री रमेशचन्द्र त्रिपाठी ने पं.शत्रुघ्न लाल मिश्र, बिल्लेश्वर शास्त्री, पं.मनोज मिश्र, विमल कुमार एडवोकेट श्री मनमोहन तिवारी, आचार्य वेदव्रत अवस्थी, पं.अखिलेश शास्त्री लखनवी तथा स्वामी वीरेन्द्र जी को सम्मानित किया।

प्रारम्भ में यज्ञ का आयोजन आर्य समाज वेदमंदिर राजाजीपुरम् द्वारा सम्पन्न हुआ। तदुपरान्त श्री यतेन्द्र सिंह एवं राधेश्याम शर्मा द्वारा मनोहर भजन प्रस्तुत किये गये। आचार्य विश्वव्रत शास्त्री, आर्ष गुरुकुल जानकीपुरम, ब्र.वीरेन्द्र, पं. नवनीत निगम, आर्य संन्यासी वीरेन्द्र स्वामी एवं श्री विमल कुमार एडवोकेट ने स्वामी जी के जीवन के विविध पक्षों पर अपने विचार रखे। प्रसाद वितरण तथा अन्य व्यवस्थाओं में श्री सन्तोष सिंह एडवोकेट का सराहनीय योगदान प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का संचाल श्री प्रत्यूषरत्न पाण्डेय, मंत्री, जिला आर्य सभा ने किया।

आर्य समाज चन्द्रनगर द्वारा सहायता

प्रख्यात संगीतज्ञ गायक पं.सत्यपाल पथिक की चिकित्सा सहायतार्थ ५०००रुपये की धनराशि आर्य समाज चन्द्रनगर द्वारा भेजी गई तथा ५०००रुपये की धनराशि टंकारा स्मारक को भी भेजी गई। *(अमिता विस्मानी, मंत्री)*

'हरि' का साहित्य पाठ्यक्रम में शामिल हो

ऊर्जावान् एवं स्वस्थ समाज की रचना के संकल्प को लेकर लेखन कार्य करने वालों में श्री हरिओम शर्मा 'हरि' का स्थान सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। शर्मा जी की सद्यः प्रकाशित पुस्तक 'छोटी बातें बड़े परिणाम' का पुस्तक मेला मोतीमहल के बृहद् पण्डाल में ०५.०१.१५ को विमोचन किया गया। इस

अवसर पर आयोजित साहित्यिक समारोह के मुख्य अतिथि थे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त सी.एम.एस. संस्थापक डॉ.जगदीश गांधी। पुस्तक का विमोचन प्रख्यात कवयित्री श्रीमती रमा आर्य 'रमा' ने तथा कार्यक्रम का संचालन श्री प्रत्यूषरत्न पाण्डेय ने किया। परिचर्चा में श्री मनोज तोमर (सम्पादक, राष्ट्रीय सहारा), ए.एस.बेदी (काल्विन कालेज), उमेश चन्द्र तिवारी (पूर्व आई.ए.एस.), वीरेन्द्र सक्सेना (पत्रकार), टी.पी.हवेलिया, मनोज कुमार चंदेल ने भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डॉ.वेद प्रकाश आर्य, प्रधान सम्पादक, आर्य लोक वार्ता ने कहा- हरिओम शर्मा की रचनाओं को विभिन्न स्तरों के हिन्दी पाठ्यक्रमों में स्थान मिलना चाहिए। क्योंकि उनकी रचनाएँ लोकमंगल की संदेशवाहिका हैं।

समावर्तन संस्कार

२८, चन्द्रलोक, अलीगंज में पुलिस उपाधीक्षक स्व.शम्भूरत्न मिश्र अपनी धर्मपत्नी स्व.सुलभा मिश्र के साथ रहा करते थे। सम्प्रति वहाँ उनके दौहित्र श्री निशीथ मिश्र एडवोकेट तथा सुपुत्री सुश्री सुकेशी रहती हैं। निशीथ मिश्र के वैवाहिक कार्यक्रमों की शृंखला में १३.१२.१४ को समावर्तन संस्कार सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर निशीथ जी की माता श्रीमती शशि मिश्र (चिकित्सा अधीक्षिका, मिर्जापुर) तथा सुकेशी, सुषमा इत्यादि स्व.शम्भूरत्न मिश्र की सभी पुत्रियाँ संस्कार में मौजूद थीं। संस्कार में आचार्य का दायित्व श्री विमल कुमार एडवोकेट ने संभाला जबकि ब्रह्मा का दायित्व डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने निर्वहन किया।

बिसारिया शिक्षा एवं सेवा समिति

बिसारिया शिक्षा एवं सेवा समिति, बी-२७६, राजाजीपुरम, लखनऊ के तत्वावधान में ०४.०१.१५, रविवार को १०१ कुण्डीय आत्मकल्याण महायज्ञ का आयोजन सरस्वती पैलेस मे किया गया। इस अवसर पर श्री नेम प्रकाश आर्य (धनुर्धर) के भजनोपदेश तथा आचार्य संतोष वेदालंकार के वेदोपदेश ने आयोजन को मनोरम बना दिया। यज्ञोपरान्त प्रीतिभोज की सुचारु व्यवस्था की गई। सेवा समिति प्रति वर्ष इस तरह के कल्याणकारी आध्यात्मिक आयोजन करती रहती है।

(धुरेन्द्र स्वरूप बिसारिया, संयोजक, शिक्षा एवं सेवा समिति)

आर्यजगत के उद्भट व्याख्याता, धर्मोपदेशक, अनन्य प्रभुभक्त
प्रातःस्मरणीय
स्वामी आत्मबोध सरस्वती जी महाराज
की
९२वीं जयन्ती पर पुण्य स्मरण

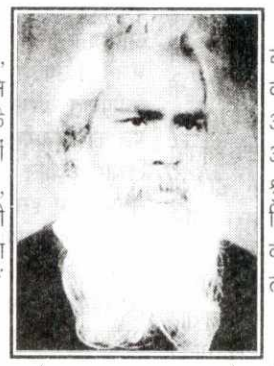

हे वाग्विद्या के धनी, मेधावती, आत्मारथी।
शुचि आर्यवानप्रस्थ आश्रम के कुशल सारथी।
ऋषिवर दयानन्द देव के अनुचर अनन्य तपोव्रती।
हे आर्यभिक्षु! बने तुम्हीं अब आत्मबोध सरस्वती।
तुम धर्मदेव प्रशिष्य हो, श्रुतिशिष्य ऋषि दयानन्द के।
तुम प्रेरणाफल ब्रह्मचारी विज्ञ अखिलानन्द के।
नव विश्व मंगल भावना के भव्य भावों को भरे।
शतवर्ष भारतवर्ष में तव भारती गूंजा करे।

-श्रीमती लक्ष्मी आर्या
आर्य वानप्रस्थाश्रम, ज्वालापुर

(१९२३ - २००२)

संस्थापक
माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास
(आर्य वानप्रस्थाश्रम, ज्वालापुर, हरिद्वार)
एवं
'आर्य्य लोक वार्ता' हिन्दी मासिक, लखनऊ

डॉ.कन्हैया सिंह ने साहित्य-संस्कृति का गौरव बढ़ाया

डॉ.कन्हैया सिंह- हिन्दी जगत का एक जाना पहचाना नाम है। उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष रह चुके डॉ.सिंह को इस वर्ष हिन्दी संस्थान, उ.प्र. ने 'पं.दीनदयाल उपाध्याय स्मृति सम्मान' प्रदान करने की घोषणा की तो समस्त हिन्दी प्रेमी संसार में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। दि. ८ दिसम्बर २०१४ को डॉ. सिंह के सम्मान में 'सेवा उद्बोधन्यास' के तत्वावधान में प्रेसक्लब के सभागार में एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता पूर्व आई.ए.एस. डॉ.विनोद चन्द्र पाण्डेय, पूर्व निदेशक हिन्दी संस्थान ने की तथा मुख्य वक्ता थे डॉ.वेद प्रकाश आर्य, प्रधान सम्पादक, आर्य लोक वार्ता। प्रो.नेत्रपाल सिंह, आनन्द मिश्र 'अभय' सम्पादक राष्ट्रधर्म, सुभाष राय, डॉ.टी.एन.सिंह ने अपनी उपस्थिति एवं अभिव्यक्ति से समारोह को गौरवान्वित किया। समारोह का संयोजन प्रख्यात कृषि वैज्ञानिक एवं साहित्यसेवी डॉ.रामकठिन सिंह संरक्षक 'शब्दिता' ने किया तथा अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद के पूर्व कुलपति प्रो.शिवमोहन सिंह ने कार्यक्रम का संचालन करके समारोह को रसमय बना दिया। समारोह की भावधारा में एक काव्यगोष्ठी भी जुड़ गई जिसका संचालन एवं संयोजन लोकप्रिय कवि श्री रामकिशोर तिवारी ने किया जिसमें गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र', वाहिद अली वाहिद, निर्मल दर्शन, डॉ.वेद प्रकाश आर्य, रामकिशोर तिवारी इत्यादि अनेक कवियों ने काव्यपाठ किया। डॉ.कन्हैया सिंह के सुपौत्र श्री विनम्र सेन सिंह को लोकधुनों पर आधारित काव्यपाठ पर विशेष सराहना मिली।

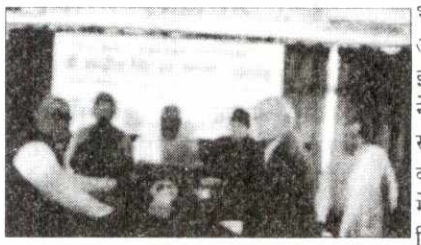

वक्ताओं ने डॉ.कन्हैया सिंह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला डॉ.वेद प्रकाश आर्य (जो उसी दयानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय, आजमगढ़ के प्राध्यापक रह चुके हैं, जिसमें डॉ.सिंह विभागाध्यक्ष थे) ने डॉ.कन्हैया सिंह के शोध प्रबन्ध ' हिन्दी सूफी काव्य में हिन्दू संस्कृति का चित्रण एवं निरूपण' तथा उनकी महत्त्वपूर्ण कृति 'पाठ सम्पादन के सिद्धान्त' की चर्चा की। आपने कहा- 'रामचरित उपाध्याय ग्रंथावली' जैसे अनेक बहुमूल्य ग्रंथों के सम्पादन एवं प्रकाशन के लिए डॉ.कन्हैया सिंह के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। अपने समय में सबसे कम आयु के आजमगढ़ नगर पालिका के अध्यक्ष रह चुके डॉ.कन्हैया सिंह को अध्यापन कौशल, साहित्य-शास्त्रीय पक्षों की गहरी समझ तथा वक्तृत्व कला, ज्ञान के साथ ही प्रतिभा सहज रूप में प्राप्त है। डॉ. आर्य ने कहा- डॉ.कन्हैया सिंह संघ के प्रति समर्पित रहे हैं किन्तु उन्होंने साहित्य साधना के क्षेत्र में कभी संघ को आड़े आने नहीं दिया। यही कारण है कि आज हिन्दी के महान् साहित्यकारों में उन्होंने अपना स्थान बना लिया है। संघ के साथ ही आर्य सामाजिक संस्थाओं को भी आपका निरन्तर सहयोग प्राप्त हो रहा है।

डॉ.कन्हैया सिंह ने अपने संक्षिप्त किन्तु सारगर्भित वक्तव्य में साहित्य के कई महत्त्वपूर्ण पक्षों पर मौलिक विचार प्रस्तुत किये। सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना के साथ पाठ सम्पादन के कई पहलुओं को रेखांकित करते हुए आपने एक जीवित जागृत समाज की संरचना हेतु नई पीढ़ी का आवाहन किया। प्रो.शिवमोहन सिंह एवं डॉ.रामकठिन सिंह ने आभार प्रदर्शन किया।

'दीवान-ए-कैलाश' का विमोचन

श्री चित्रगुप्त परिवार, गोमती नगर, लखनऊ के वार्षिक उत्सव के अवसर पर हिन्दी के प्रख्यात वरिष्ठ कवि डॉ.कैलाश निगम की नवीन पुस्तक 'दीवान-ए- कैलाश' का विमोचन किया गया। इस अवसर पर उपस्थित जाने माने हृदयरोग विशेषज्ञ डॉ.ए. के.श्रीवास्तव, पत्रकार रमेश कुमार, श्री राजकुमार सी.डी.ओ., उमेश कुमार आई.पी.एस. एवं शिक्षाविद् डॉ.ज्योत्सना श्रीवास्तव तथा श्री एच.एल.श्रीवास्तव की गौरवमयी उपस्थिति में सम्पन्न इस कार्यक्रम में डॉ.कैलाश निगम के शायराना मिजाज को भूरि भूरि सराहना मिली।

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

प्रधान संपादक
डॉ0 वेद प्रकाश आर्य
'वेदाधिष्ठान' 539क/234, हरीनगर, पो0-इन्दिरानगर, लखनऊ - 226016
9450500138

संपादक (अवैतनिक)
आलोक वीर आर्य
8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
9795445800

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
9956087585

कार्यालय प्रमुख
श्रीमती सरला आर्य
9450500138

E-mail-
aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि

सामान्य सदस्य	–	100 रु. वार्षिक
व्रती सदस्य	–	250 रु. वार्षिक
ऋत्विक् सदस्य	–	1,200 रु. वार्षिक
होता सदस्य	–	2,500 रु. वार्षिक
संरक्षक	–	12,000 रु.
प्रतिष्ठापक	–	50,000 रु.

सहयोग राशि 'बैंक ऑफ बड़ौदा' की किसी भी शाखा में 'आर्य्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है-
खाता धारक – आर्य लोक वार्ता
खाता सं. – 46900 1000 00651
खाते का प्रकार–बचत खाता
बैंक–बैंक आफ बड़ौदा, विभव खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ।
IFSC - BARBOVIBHAV

प्रतिष्ठापक
श्री आनन्द कुमार आर्य, कोलकाता
श्री अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट, लखनऊ
श्री जे.पी.अग्रवाल, कनखल, हरिद्वार
डॉ. रजत बत्रा, लखनऊ

संरक्षक
श्री अर्जुनदेव चड्ढा, कोटा, राजस्थान
श्रीमती प्रमोद कुमारी, लखनऊ
श्रीमती शालिनी कुमार, लखनऊ
श्री कौशल किशोर श्रीवास्तव, लखनऊ
श्री जगदीश लाल खत्री, लखनऊ
श्रीमती कुसुम वर्मा, लखनऊ
डॉ. रूपचन्द 'दीपक', लखनऊ

परामर्श एवं सहयोग
श्री रघुनाथ सिंह आर्य, कानपुर
श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', सीतापुर
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई
शिवशंकर लाल वैश्य, सीतापुर

प्रमुख सलाहकार
श्री आनन्द चौधरी एडवोकेट, लखनऊ
श्री अखिल मित्र शास्त्री, लखनऊ

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी-२, हिमांशु सदन, ५-पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' ५३९क/२३४ हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.-इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।

आवश्यक सूचना
शिविर कार्यालय
डॉ. वेद प्रकाश आर्य,
प्रधान सम्पादक, आर्य लोक वार्ता
19/838, प्रथम तल, रिंगरोड,
इन्दिरा नगर, लखनऊ-226 016